(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 9, मार्च - 2015
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

परमपिता शिव परमात्मा
गीता - ज्ञान - दाता

79वीं शिवजयन्ती महोत्सव पर शान्तिवन परिसर में शिवध्वजारोहण का मनोरम दृश्य।

1.शान्तिवन (आबू रोड)- 'रेडियो मधुबन' के चौथे वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करते हुए योजना आयोग के संयुक्त सचिव भाता देवव्रत दास, प्रसिद्ध गायिका बहन हमशिखा अय्यर, ब्र.कु.रेमश शाह, ब.कु.करुणा भाई, ब.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब.कु.यशवंत भाई, ब.कु.आशा बहन तथा अन्य। **2.मराडपल्ली-सिकंदराबाद**- 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए केन्द्रीय श्रम और रोजगार मंत्री भाता बंदारू दत्तात्रेय। मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, विधायक भाता मुरली मोहन, ब.कु.सन्तोष बहन, ब.कु.मंजू बहन तथा अन्य। **3.भुवनेश्वर**- उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम डॉ.एस.सी.जमीर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.लीना बहन। साथ में बैठे हैं मुख्यमंत्री भाता नवीन पटनायक। **4.कटक**- 'दी फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब.कु.कमलेश बहन, भाता निजार जुमा, भाता एन्थोनी फिलिप्स, न्यायाधीश भाता ए.सूर्य नारायण नायडू तथा अन्य। **5.इन्दौर (ओमशांति भवन)**- महाशिवरात्रि महोत्सव में विचार व्यक्त करते हुए पद्मश्री समाजसेविका बहन जनक पलटा। मंचासीन हैं महंत राघवेन्द्र मुनि, पूर्व महापौर डॉ.उमाशशि शर्मा, ब.कु.अनिता बहन तथा ब.कु.ऊषा बहन। **6.गोपालपुर**- उड़ीसा के मुख्यमंत्री भाता नवीन पटनायक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.मंजू बहन। **7.देहरादून**- 46वें विश्व शान्ति दिवस पर विचार व्यक्त करते हुए उत्तराखण्ड के कृषि मंत्री डॉ.हरक सिंह रावत। मंचासीन हैं कृषि उत्पादन मण्डी समिति अध्यक्ष भाता रविन्द्र सिंह, ब.कु.प्रेमलता बहन तथा ब.कु.मन्जू बहन। **8.जबलपुर (कटंगा कालोनी)**- महाशिवरात्रि महोत्सव का उद्घाटन करते हुए महामण्डलेश्वर डॉ.स्वामी मुकुन्ददास महाराज, मौलाना चाँद कादरी, फादर डॉ.डेविस जार्ज, सरदार गिरिजा सिंह, कौमी एकता मंच के सर्वेश्वर भाता चमन श्रीवास्तव तथा ब.कु.विमला बहन।

संजय की कलम से ..

होलिकोत्सव

भारत में जितने भी त्यौहार मनाये जाते हैं, होली उन सभी से विलक्षण है। इसे लोग खूब हास-परिहास के साथ मनाते हैं। होली के दिन हो-हल्ला मचा रहता है और लोग एक-दूसरे को गुलाल-अबीर इत्यादि से रंग डालते हैं तथा रात्रि को होलिका जलाते हैं। आखिर इस त्यौहार को इस दिन तथा इस रीति से मनाने के पीछे रहस्य क्या है?

पंडित लोग कहते हैं कि भविष्य पुराण में नारद जी ने राजा युधिष्ठिर से होली के सम्बन्ध में जो कथा कही, वह इस प्रकार है –

नारद जी बोले – ''हे नराधिप! फाल्गुन मास की पूर्णिमा को सब मनुष्यों के लिए अभय दान देना चाहिए जिससे समस्त प्रजा भय-रहित होकर हँसे और क्रीड़ा करे। डंडा और लाठी लेकर बालक शूरवीरों की तरह गाँव के बाहर जाकर होली के लिए लकड़ी और कंडों का संचय करें। उस होलिका-दहन, हास-परिहास, खिलखिलाहट और मन्त्र उच्चारण से पापात्मा राक्षसी नष्ट हो जाती है। इस व्रत की व्याख्या से हिरण्यकश्यप की बहन अर्थात् प्रह्लाद की बुआ, जो प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठी थी, प्रतिवर्ष 'होलिका' नाम से आज तक जलाई जाती है। हे राजन्, होलिका-दहन इत्यादि से सम्पूर्ण अनिष्टों का नाश होता है....।''

आसुरी वृत्तियाँ ही 'पापात्मा राक्षसी' हैं

बुद्धिमान लोग उपरोक्त कथा-सार को पढ़कर समझ सकते हैं कि इसका शब्दार्थ लेना युक्ति-संगत नहीं है बल्कि भावार्थ अथवा लक्षणार्थ लेना ही विवेक-सम्मत है क्योंकि केवल लकड़ी और कंडों के दहन से तो सभी अनिष्टों का नाश हो नहीं सकता, न ही कभी ऐसा हुआ है। वास्तव में तो लकड़ी और कंडे अपने स्वभाव तथा कर्मों में जो दुख देने वाली आदतें हैं, जो कटुता, शुष्कता, क्रूरता तथा विकार रूप झाड़-झांकड़ हैं, उनके प्रतीक हैं और अग्नि 'योगाग्नि' का प्रतीक है। अत: बुरे संस्कारों, नास्तिकता तथा अभिमान रूप होलिका इत्यादि को परमात्मा रूप दिव्य अग्नि की पाप-दह शक्ति में होम कर देना अथवा योगाग्नि में भस्म कर देना ही 'होलिका-दहन' है। इससे मनुष्य के मन में हर्ष और आह्लाद होना स्वाभाविक है इसलिए यह हास-परिहास का त्यौहार माना गया है। 'अभय दान' देने का अर्थ भी यही है कि हम कोई ऐसे कर्म न करें, हिंसा, क्रोध, द्वेष इत्यादि के वशीभूत होकर व्यवहार न करें जिससे कि

अमृत-सूची

- लोग क्या कहेंगे *(सम्पादकीय)*..5
- तपस्या वर्ष *(कविता)* 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी.....7
- भगवान के प्रति वफादारी 9
- बाबा कहते *(कविता)* 10
- 'पत्र' संपादक के नाम 11
- आवश्यक सूचना 11
- ईश्वरीय कारोबार में 12
- स्वमान या पुरुष समान 15
- कैंसर शाप नहीं, वरदान.....18
- आदर्श पुरुषार्थी 19
- हिम्मत 21
- ईश्वरीय शक्ति 22
- बाबा ने लगा दिए पंख 23
- स्वयं रूहानी सर्जन.....24
- वाह ज्ञानामृत.....25
- बाबा ने जगाई जीवन-ज्योति .26
- सदा मुसकराइये 27
- नारी तू शिवशक्ति *(कविता)* .29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- ग्लोबल अस्पताल में 32
- श्रद्धांजलि 33
- टेन्शन नहीं, अटेन्शन 34

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

हमसे किसी को भय हो। पुनश्च, सोचने की बात है कि 'पापात्मा राक्षसी' तो हमारे मन में बैठी हुई आसुरी वृत्तियों तथा पापजनक कर्मों की ही सूचिका है। अत: हम ज्ञान-रंग से एक-दूसरे को (आत्माओं को) रंगकर, मन के कुभावों तथा कुसंस्कारों का कचरा दग्ध कर दें – यही होली और होलिकोत्सव का वास्तविक रहस्य है परन्तु इसकी बजाय आज होता यह है कि लोग हो-हल्ला और हुड़दंग अधिक मचाते हैं और वास्तविक भाव से होली नहीं मनाते।

दूसरी कथा

पंडित लोग कहते हैं कि ब्रह्म पुराण में लिखा है कि ''फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन जो मनुष्य चित्त को एकाग्र करके हिंडोले में झूलते हुए श्री गोविन्द पुरुषोत्तम का दर्शन करता है वह निश्चय ही वैकुण्ठ को जाता है। यह होलकोत्सव होली के दूसरे दिन होता है और उसी दिन अबीर-गुलाल की फाग होती है। फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन मनु का जन्म हुआ था। इसी कारण यह मनु तिथि भी है। अत: इसके उपलक्ष्य में भी यह उत्सव मनाया जाता है। संवत के आरम्भ एवं वसन्तागमन के निमित्त अग्निस्वरूप परमात्मा के पूजन के लिए होलिका दहन भी किया जाता है जोकि संवत के आरम्भ का सूचक है.....।''

स्पष्ट है कि यहाँ भी अक्षरार्थ नहीं बल्कि भावार्थ ही ग्राह्य है वरना वर्ष में एक दिन हिंडोले झूलने से तो मनुष्य बैकुण्ठ में जा नहीं सकता। भाव यह है कि (1) हम श्रीकृष्ण (गोविन्द पुरुषोत्तम) को लक्ष्य रूप में अपने मन के नेत्र के सामने रखें, (2) मन में सदा हर्ष बनाये रखें (सदा हर्षितमुखता का गुण धारण किये रहें) और (3) चित्त को (परमात्मा के स्वरूप में) एकाग्र किया करें तो हम निश्चित रूप से बैकुण्ठ में जायेंगे ही क्योंकि (1) पुरुषोत्तम श्री नारायण को लक्ष्य रूप में धारण करने से हम में भी उत्तम अर्थात् दिव्य लक्षण आयेंगे, (2) मन में सदा हर्ष तभी रहेगा

जब हम साक्षी, अनासक्त और आत्म-निष्ठ होकर व्यवहार करेंगे, गोया अच्छे ही कर्म करेंगे और (3) चित्त को परमात्मा में एकाग्र करने से हमारे पिछले विकर्म दग्ध होंगे तथा संस्कार शुद्ध होंगे। अत: हिंडोले में झूलना इत्यादि का भाव तो यही है किन्तु आज तो लोग स्थूल ही हिंडोले में झूलते हैं!

फिर, मनु के जन्म तथा नये वर्ष के आरम्भ के दिन होली मनाने का भाव भी यही है कि हम अपनी पिछली बातों को भूलकर मानसिक रूप में 'नया जन्म' लें, नये संस्कार बनायें और अपने जीवन का नया अध्याय खोलें।

पुराना त्यौहार

भारत के लोगों की मान्यता है कि यह त्यौहार बहुत प्राचीन काल से चला आया है। इस अवसर पर लोग वेद के 'रक्षोहगं बलगहम्' आदि राक्षस विनाशक मन्त्रों से होलिका दहन किया करते थे। लोगों की इस मान्यता का रहस्य भी यही तो होता है कि हम राक्षसी आहार, आचार, व्यवहार आदि से अपनी रक्षा करें। उसी के निमित्त रंग खेलना गोया आत्मा को ज्ञान-रंग या सत्संग के रंग में रंगना है और होलिका-दहन हमें इस बात की याद दिलाता है कि पापी अपने ही किये पाप के ताप से जल मरता है अत: हमें पाप नहीं करने चाहिएँ।

होली-विषयक ये धारणायें हमारे जीवन में तभी घटेंगी जब हम होली को हो-ली (अर्थात् जो हो लिया उसे भुलाकर) मानकर आगे के लिए शुभ कार्यों में प्रवृत्त होंगे।

लोग क्या कहेंगे!

मनुष्य स्थाई आनंद चाहता है। आनन्द के नाम पर नित नई चीज़ें सामने आ रही हैं परन्तु अल्पकाल की खुशी से ज्यादा कुछ दे नहीं पातीं। महात्मा गांधी ने जिन सात पापों की चर्चा की थी उनमें एक विवेकहीन आनन्द भी है जिसका अर्थ है, आनन्द के नाम पर मानव अपने तन को, इन्द्रियों को, धन को, आयु को और सम्बन्ध को ही खोखला कर रहा है। भारतीय संस्कृति का नारा है कि स्थाई आनन्द योग द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। योग अर्थात् मन का परमात्मा से जोड़ जिससे सर्वशक्तिमान परमात्मा की शक्तियाँ मन में भर जाती हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की प्रत्येक शाखा में यह योग निःशुल्क सिखाया जाता है।

बलि चढ़ानी है भेड़चाल की

देखने में आता है कि जब व्यक्ति इस उच्च मार्ग की ओर अग्रसर होता है तो अनेक बाधाएँ उसका मार्ग रोकने का प्रयास करने लगती हैं। इनमें से पुराने संस्कार, संगी-साथी, आलस्य आदि तो हैं ही पर सबसे बड़ी बाधा है लोकलाज की। 'लोग क्या कहेंगे' इस प्रश्न के घेरे में मनुष्य सिमटने लग जाता है। लोगों की तानाकशी से बचने के लिए लोगों की तरह ही आरामपसन्द, मन, वाणी, कर्म से अनियन्त्रित, नकारात्मकता से परेशान और विकारों की गिरफ्त में असन्तुष्टता का जीवन जिए जाता है और सोचने लगता है कि जो सभी का हाल होगा वह मेरा भी हो जाएगा। इस प्रकार दूसरे भौतिकवादी लोगों को देखकर स्वयं भी श्रेष्ठ पुरुषार्थ से मुख मोड़ने का ख्याल करने लगता है परन्तु हम यह भी तो सोचें कि अनुकरण तो किसी समर्थ का किया जाता है। जो जनसमूह स्वयं ही विकारों का गुलाम है, उसका अनुसरण करना तो भेड़चाल ही है। जैसे भेड़ें अपने झुण्ड से अलग रास्ता लेना नहीं चाहतीं वैसे ही हम मनुष्य तन में होते भी भेड़-का-सा व्यवहार क्यों कर रहे हैं? लोग भगवान शिव पर और देवियों पर भेड़ की बलि चढ़ाते हैं, वास्तव में बलि तो भेड़-चाल की चढ़ानी है, न कि मूक जानवर की। और फिर जिस लोकमत का हवाला देकर हम अपने पाँव अच्छाई से हटा रहे हैं, बीमारी, गरीबी, कलह, मुक़दमा, सम्बन्ध-विच्छेद आदि समस्याओं में यह लोकमत हमारा कितना सहयोगी बनता है, इससे तो हम सभी परिचित हैं। जब ये समस्याएँ आती हैं तो हम आश्रम-मन्दिर की ओर भागते हैं और भगवान से मदद की गुहार लगाते हैं परन्तु भगवान भी यही कहते हैं, जिस लोकमत का तुम अनुसरण करते आ रहे हो, अब मदद भी उन्हीं से मांगो। जिन लोगों की लाज से दबे जा रहे थे उन्हीं को ही सहारा बनाओ। परन्तु ज़रूरत पड़ने पर वे तथाकथित हितैषी तो हमारी बात को अनसुना और अनदेखा करने वाले बन जाते हैं।

लोकमत कब देवता बना दे, कब अपमान कर दे

यादगार शास्त्र रामायण में लोकमत का बहुत सुन्दर वर्णन किया गया है। जब हनुमान जी को बांधकर रावण के सामने ले जाया गया तो उन्हें बन्दी जानकर राक्षसों ने उनको अपमानित किया पर जब उनकी पूंछ से लंका जलने लगी तब वही राक्षस उसे देवता कह कर सम्मानित करने लगे और कहने लगे, हम तो पहले ही जानते थे कि यह साधारण नहीं है। लोकमत कब देवता बना दे और कब अपमान कर दे, इसका कोई ठिकाना नहीं है इसलिए सत्य के अन्वेषी को लोकमत की परवाह न कर अपने मार्ग पर चलते रहना चाहिए।

जनमत है दोष परीक्षक

महान लोग रास्ते की रुकावटों से घबराते नहीं, वे उन्हें ऊँचाई की ओर ले जाने वाली सीढ़ियों में तब्दील कर लेते हैं। हम भी महानता के पथ के राही हैं अत: लोकमत को ऊँचा ले जाने वाली सीढ़ी की तरह प्रयोग करें। जब शरीर में रोग होता है तो हम अपना रक्त, जाँच के लिए देते हैं। जाँचकर्त्ता खून के एक कतरे को कई गुणा बड़ा करके और उसमें छिपे छोटे-से रोगाणु को भी हजार गुणा बड़ा करके देखता है। उसके इस कार्य से हम बड़े खुश होते हैं कि उसने हमारे शरीर की बीमारी के कारणरूप इस रोगाणु को इतना बड़ा करके देख लिया, पहचान लिया, अब तो इसका खात्मा हो ही जाएगा और हम स्वस्थ हो जाएंगे। खून परीक्षक की तरह ही जनमत भी दोष परीक्षक है। वह हमारे छोटे-से दोष को भी बड़ा करके देखता है और दोष न हो तो भी उसकी सम्भावना से हमको आगाह करता है। हम ठीक मार्ग पर हों तब भी हमारी परीक्षा लेकर हमको पक्का करता है। जनमत के इस व्यवहार से हमें हर्षित होना चाहिए कि वह हमारा कितना ध्यान रखता है और उत्साहित हो अपने मार्ग पर और भी अधिक तीव्रता से दौड़ना है। लोगों के पीछे भागना नहीं पर उनसे सीखना है और जीवन को आदर्श बनाकर उन्हें सिखाना भी है।

जो करने की विधि वही मिटाने की विधि

ईश्वरीय ज्ञान द्वारा सच्चा आनन्द पाने के पुरुषार्थी को कई बार ऐसे संकल्प भी आते हैं कि भगवान शिव सर्व समर्थ हैं, जब मैं उनकी ओर बढ़ रहा हूँ तो वे मेरे मार्ग की बाधाओं को मिटाते क्यों नहीं? यह मानी हुई बात है कि यदि कोई दूसरा ही हमारे लिए सब कुछ करता रहे तो हमारा विकास रुक जाता है और उस कर्म का फल भी करने वाले को ही मिलता है, हमें नहीं। करे सब कुछ भगवान और फल मिल जाए हमें, ऐसी चाहना क्यों? और फिर मार्ग में आने वाले विघ्नों का बीजारोपण भी तो हमने ही किया था। जिस कार्य को करने की जो विधि होती है, उसे मिटाने की विधि भी वही होती है। हम कदम-कदम चलकर कहीं जाते हैं तो कदम-कदम चलकर ही लौटना पड़ता है। यदि धागे को हाथों से लपेटते हैं तो फिर खोलने के लिए भी हाथों को पुन: उसी प्रकार लगाना पड़ता है। इसी प्रकार, जानकर या अनजानेपन में मन, वाणी, कर्म द्वारा जो विकर्म हुए, ज्ञान मिलने पर अब मन, वाणी, कर्म से सुकर्म करके उस खाते को चुक्ता भी हमें ही करना है अत: विघ्नों को देख घबराना नहीं, श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा लेनी है। हिम्मत का एक कदम तो हमें ही बढ़ाना है फिर भगवान शिव हज़ार कदमों से मदद अवश्य करेंगे।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

तपस्या वर्ष - 2015

ब्रह्माकुमार निर्मल पुरोहित, गुवाहाटी

उखाड़ फेंको उस चट्टान को जो तुम्हारा रास्ता रोके,
माया से कैसे निबटेंगे वो जो देते स्वयं को धोखे।

बहुत सो लिये कुम्भकरण की नींद, अब दहाड़ कर दिखाओ,
शिवशक्ति सेना हो तुम, माया पर प्रहार कर दिखाओ।

परमपिता की पालना का तुमको रिटर्न कर देना है,
परमशिक्षक की शिक्षाओं पर स्वयं को टर्न कर देना है।

परमसद्गुरु की आज्ञाओं पर कुसंस्कारों को बर्न कर देना है,
परमात्मा के महायज्ञ में न्योछावर तुमको सर्व कर देना है।

तो क्या जो तुम कर रहे हो वह पुरुषार्थ काफी है?
पवित्रता की प्रतिज्ञा तोड़ी तो यह वादा खिलाफी है।

याद रखना, धर्मराज के दरबार में नहीं कोई माफी है,
इस धर्मयुद्ध में जीते तो मिलनी सतयुगी ट्राफी है।

लक्ष्य और लक्षण को, पुरुषार्थ कर बनाओ समान,
अटेन्शन रूपी सेनापति को सौंप दो अपनी कमान।

तपस्या वर्ष में तीव्र पुरुषार्थ की फैलाओ लहर,
समय भी थक गया है अब और नहीं सकता ठहर।।

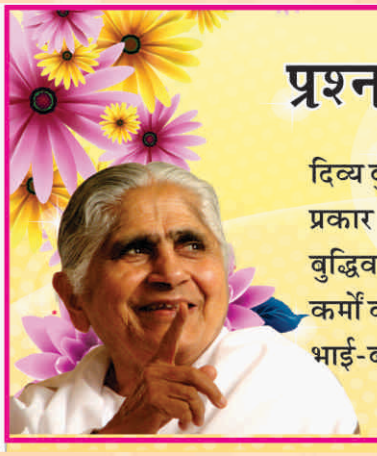

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- संग में सेवा करने वालों के बारे में क्या भाव रखें?

उत्तरः- जितनी पढ़ाई उतनी कमाई। अन्दर संकल्प की जो शुद्धि है ना, वह औषधि है। यह औषधि जो जितना यूज़ करता है उसके लिये उतना अच्छा होगा। अन्त मते तक बाप, टीचर, सतगुरु तीनों को खुश करना है। तीनों को खुश करना माना धर्मराज को खुश करना। हैं रूप तीन ही लेकिन उनके अन्दर धर्मराज छिपके बैठा है। हर दिन सुबह-शाम हरेक देखे, मेरी खुशी गुम क्यों हुई? धर्मराज ने सज़ा दी। अभी सज़ा देते हैं कान पकड़के थोड़ा सावधान करने के लिए। बाबा ने कहा था, मुरली सुनते समय अगर बुद्धि इधर-उधर गयी तो योग नहीं है। देखा जाता है, कान यहाँ हैं पर बुद्धि बाहर है तो बात अन्दर नहीं जाती है इसलिए सबके साथ रहते हुए भी जो अन्तर्मुखी है वो सदा सुखी है। मेरे संग सेवा करने वाले भी सुखी हों। परमात्मा पिता तो सबको सुख-शान्ति में सम्पन्न बना देते हैं

प्रश्नः- एक-दो को आपस में मिलाने की शक्ति किसमें आ सकती है?

उत्तरः- मिल करके रहने की या मिलाने की विज़डम कहाँ तक, किसमें है? जो मिल करके रहता है वो मिलाने बिगर चल नहीं सकता है, उसको अनुभव है। उसको कभी दूरबाज खुशबाज का ख्याल नहीं आयेगा। इस ख्याल से जो फ्री हुआ, बाबा उससे अनेक काम करा लेता है। यह बाबा ने आज दिन तक कराया है। मैं कहती हूँ, जितना बाबा को अपना बनाओ, तो बाबा भी हमें अपना बनाके हर कार्य कराता है। फिर हर कार्य करते, सम्बन्ध में रहते भी मुसकरा सकते हैं। श्रेष्ठ वृत्ति से दृष्टि महासुखकारी। सारा पुरुषार्थ वृत्ति पर है। मन शान्त है तब बुद्धि भी ठीक काम करती है। वृत्ति साफ है तो खुद सतोप्रधान बनने से और भी बन जाते हैं। फिर बाबा बहुत खुश हो जाते हैं क्योंकि बाबा को ऐसे बच्चे चाहिएँ।

प्रश्नः- हम आपस में मिल करके काम करें, उसके लिए कुछ बताइये?

उत्तरः- हरेक के पार्ट में अपनी विशेषता है। यह बाबा का बच्चा है, अगर यह नहीं देखेंगे तो विशेषता नहीं दिखाई पड़ेगी। मैं बाबा का बच्चा हूँ, छोटी बेबी नहीं हूँ। समझ से काम लेना है। भगवान के परिचय से हमारी बुद्धि क्लीन हो गयी है। संगमयुग है, ये बाबा के बच्चे हैं, मैं इस दृष्टि से देखती हूँ, इस स्मृति में रहती हूँ तो हमारा आपसी व्यवहार अलौकिक हो जाता है। अगर बातों में उलझे हैं, बाप की भी सुनने वाले नहीं हैं तो वही लहर पूरे संगठन में चलती है। जो बाप ने सुनाया, उस पर अमल करने से कहीं कोई समस्या नहीं है। आज नहीं तो कल संग और सहयोग, सच्चाई से समीपता आती है। स्नेह से सहयोगी बन जाते हैं, संगठन का किला मजबूत हो जाता है। संगठन में रहते, इसको ऐसे नहीं करना चाहिए, ऐसे नहीं

कहना चाहिए, यह ख्याल आया तो जो बाबा सिखाता है वो नहीं होता है। किसी बात को सोचके भारी नहीं हो जाना है। लाइट रहेंगे तो बाबा की माइट औरों को भी सहयोग देगी। स्वच्छता, सत्यता और सभ्यता से व्यवहार तथा वायुमण्डल बहुत पावरफुल हो जाते हैं, उसमें सब खिंच जाते हैं। जहाँ स्वच्छता है वहाँ बेफिक्र हैं। जहाँ सत्यता है वहाँ जीत है। जो बाबा कहते रहे वह निमित्त हमारे द्वारा होता रहा, उससे पता चलता गया कि यह हमारा पार्ट है। बाबा ने कहा, यह ज्ञान विदेश में जायेगा, सब धर्म वालों को मिलेगा तो आज देखो कहाँ-कहाँ तक यह ज्ञान पहुँच गया है। वे भी परमात्मा बाप को जान करके अपने सतयुगी पार्ट का हक ले रहे हैं। हरेक अपने कर्म से भाग्य बना रहे हैं। जितना जिसने इस ज्ञान को अपने जीवन में लाया है उतना उसका फल अच्छा पाया है।

प्रश्नः- भूलें क्यों होती हैं?

उत्तरः- सोल-कॉन्सेस नहीं रहते इसलिए भूलें होती रहती हैं। पहला पाठ प्रैक्टिकल में नहीं लाया है। सोल-कॉन्सेस रहने से संकल्प शुद्ध-शान्त रहते हैं, यह प्रैक्टिस नहीं की है। समझा है, समझाया भी है पर प्रैक्टिस नहीं की है। जिसने प्रैक्टिस की है वो कभी निराश नहीं हुआ है। नहीं तो कोई न कोई प्रकार से निराशा का, नाउम्मीदी का संस्कार इमर्ज हो जाता है। उससे फिर शरीर पर भी प्रभाव आता है। मैं सदा ही स्वस्थ हूँ, कुछ भी आयेगा एक-दो घण्टे के लिए आयेगा। वह भी अटेन्शन खिंचवाता है, थोड़ा अपने को टाइम दो, सच्ची रेस्ट करने का।

प्रश्नः- चार्ट में विशेष क्या देखें?

उत्तरः- जैसे भगवान सत्य है, ऐसे हमारे सूक्ष्म संकल्पों में शुद्धि, शान्ति, सच्चाई हो। बाबा की शिक्षाओं ने ही यहाँ तक पहुँचाया है। अव्यक्त बाबा तथा साकार बाबा ने अमृतवेले का महत्व बताया है, सभी करते हैं पर एक्यूरेट करो तो बहुत फायदा है। तन, मन, धन, सम्बन्ध में शुद्धि हो। बॉडी-कॉन्सेस सूक्ष्म है। बाबा का शुक्रिया करती हूँ, बाबा बुद्धि आपने दी है, मन भी इच्छा, ममता से फ्री है। हरेक अपना चार्ट देखे, मेरी याद सच्ची है? और कोई बात याद न हो। भले तबीयत कैसी भी हो पर अमृतवेला कभी भी मिस न हो।

प्रश्नः- कभी-कभी हम किसी के प्रति कुछ बोलते हैं, वो स्वीकार नहीं करते हैं तो सूक्ष्म हमारी भावना बदलती है। भावना ना बदले, उसके लिए क्या करें?

उत्तरः- इसको थोड़ी समझ कम है, यह सोच लेंगे तो फीलिंग नहीं आएगी। उसमें भावना रखेंगे तो वह ठीक हो जाएगा। वह आज मुझे नहीं पहचानता है, कोई हर्जा नहीं, कल पहचानेगा पर मैं अपनी स्वमान की सीट से क्यों उतर आऊं। सदा हज़ूर के साथ हाज़िर रहूं, वह मेरे साथ है। भिन्न-भिन्न बातें होती हैं फिर भी साक्षी हो करके साथ रहने का नेचुरल नेचर बनाया है। ऐसे नहीं कि हमेशा उन्हीं बातों को दोहराते उसके पीछे लगे रहें। अच्छी-बुरी कोई भी बात है, उन बातों पर हमें चिंतन नहीं करना है क्योंकि अपने आपको सेफ भी रखना है, साफ भी रखना है। कभी भी कोई हमारे ऊपर वार करे, नहीं, किसकी ताकत नहीं है।

प्रश्नः- जो हुआ, अच्छा हुआ, जो होगा, सो अच्छा, यह किसको अनुभव होगा?

उत्तरः- जो हुआ अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, यह वही बोल सकेगा जिसके पास त्याग, तपस्या और सेवा का बल है। बाबा ने कहा, अच्छे बच्चे वे जो भले शरीर निर्वाह अर्थ कमावें पर अपने ऊपर खर्च न करें या लौकिक के लिए बुद्धि न जाये। तपस्या माना कहाँ बुद्धि न जाये। त्याग माना स्थूल-सूक्ष्म सफाई। जहाँ सेन्टर पर सफाई नहीं है वहाँ बाबा को भोग कैसे लगेगा! कोई भी एक्स्ट्रा चीज़ रखने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि संगमयुग पर भगवान खिलाये, हम खायें, उसी के भण्डारे में बनायें, उसके लिए बहुत अच्छी सफाई चाहिए। ❖

पुण्यतिथि पर विशेष...

भगवान के प्रति वफादारी में बेमिसाल थी दादी जी

➢ ब्रह्माकुमारी रुक्मिणी, शान्तिवन

जैसे पहाड़ों में हिमालय, तारों में ध्रुव तारा, भक्तों में मीराबाई व सूरदास का स्थान अति विशेष है उसी प्रकार यज्ञ-वत्सों में ब्रह्मा बाबा की सुपुत्री दादी निर्मलशान्ता जी भी अपना अति विशेष स्थान रखती हैं। आपका लौकिक नाम था पार्वती। सच में सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता और मातृवत् पालना की मिठास के आधार से आप शिव की सच्ची-सच्ची पार्वती थीं। अन्त समय तक फूल की तरह खिला हुआ आपका स्वरूप सर्व आत्माओं के साथ-साथ धरा पर अवतरित हुए भगवान को भी बहुत प्यारा लगता था। अपनत्व से भरा आपका व्यवहार सभी को तृप्त, प्रसन्न, आह्लादित किये बिना नहीं छोड़ता था। यज्ञ-रक्षक, यज्ञ-स्नेही और भगवान के प्रति वफादारी सीखनी हो तो परदादी सचमुच ही बेमिसाल थीं। सेवाकेन्द्रों के हिसाब-किताब में सच्चाई-सफाई तथा कम खर्च बालानशीन की तो वे अवतार थीं।

मैं, मेरा, सम्बन्ध और धन का अभिमान परदादी में रंचमात्र भी नहीं था। पोज़िशन पाने की होड़ तो दादी की परछाई को भी छू नहीं सकती थी। ससुर और पीहर घर की सम्पन्नता व विलासिता को सेकण्ड में भुलाकर बर्तन धोने, चप्पल बनाने, गोबर व कोयले मिलाकर उपले तैयार करने, गाड़ी साफ करने और चलाने, पहरा देने आदि अनेकों स्थूल ईश्वरीय सेवाओं में भी वे सर्वभावेन समर्पित हो जुट गईं। सच में त्याग का भी त्याग परदादी के एक-एक कदम पर साक्षात् दिखाई देता था। उनकी शान्त, शीतल, खुशनुमा, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति आत्माओं के कड़े-से-कड़े संस्कारों को पलक झपकते बदल देती थी।

सर्वस्व न्योछावर करने वाले प्रजापिता ब्रह्मा की परदादी मात्र बेटी ही नहीं परन्तु सम्पूर्ण रूप से ट्रयू-कॉपी (समान) थीं। ब्रह्मा बाबा की ही तरह वे अलौकिक, निरहंकारी और आकर्षण मूरत थीं। उनकी सीरत और सूरत से बापदादा की स्पष्ट झलक दिखाई देती थीं। तभी तो उनके समीप जाने वाले सहज ही कह उठते थे – 'आप तो साक्षात् बाप समान साक्षात्कारमूर्त हैं। आपकी पालना से बाप की पालना महसूस होती है।' कहा जाता है कि योगी अल्पाहारी होते हैं। परदादी का आहार छोटे बच्चों की तरह था। वे छोटी-सी एक ही चपाती

खाती थी। यदि किसी बहन ने चपाती बड़ी बना दी तो उसी में से बनाने वाले को प्यार से गिट्टी खिलाते हुए हँस कर कहती थी, लोभी लाला, आज तुमने रोटी बड़ी बनाई है। वे फरिश्तों जैसे चलती थीं और कभी कोई ज़ोर से हँसता तो कहतीं कि देवतायें कभी ज़ोर से नहीं हँसते। वे बताती थीं, देवता के हाथ देने के लिए होते हैं, न कि लेने के लिए, मांगने से मरना भला। परदादी को छोड़ कर जाते समय प्रायः सभी बहनों की आँखें भर आती थीं। वे उन्हें माँ से भी ज्यादा प्यार-दुलार देती थी। उन्हें देखते लगता जैसे परी बैठी हैं।

ज्ञानामृत

एक बार अव्यक्त बापदादा ने परदादी से कहा कि तुम्हें तो बहुत नशा रहता है कि मेरे एक में तीन बाप हैं, लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक। उन्होंने झट अव्यक्त बापदादा को उत्तर दिया कि तीन क्यों, मैं चार बाप की बेटी हूँ। जब बाबा ने पूछा, कैसे? तो उन्होंने कहा, सतयुग में श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण की भी बेटी बनकर मैं ही आऊँगी। बाबा ने कहा कि बच्ची को एक और पगड़ी चढ़ गई। थ्री-इन-वन ही नहीं अब एक में चार समा गये।

परदादी का लौकिक जन्म दिनांक 24 अक्तूबर, 1916 को हैदराबाद (कराची) में हुआ था। दो भाइयों और चार बहनों में तीसरे नम्बर पर थीं। प्यार से बाबा उन्हें पालू कहा करते थे। आप ईस्टर्न ज़ोन की संचालिका के साथ-साथ विश्वव्यापी ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका भी थीं। दिनांक 15 मार्च, 2013 को प्रात: 2.45 बजे 97 वर्ष की उम्र में पुराना शरीर छोड़, अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप धारण कर नव विश्व निर्माण में और ही तीव्रगति से सहयोगी बन गईं।

परदादी की अलौकिक पालना में बिताये हुए सुनहरे पल आज भी ब्रह्मा-वत्सों की नज़रों में झिलमिलाते रहते हैं। आपके ममतामय, अलौकिक मुख से मधु रस बरसाते मोती आज भी सभी में उमंग-तरंग भरते रहते हैं। जैसे कि आप ब्रह्मा-वत्सों के दिलों की धड़कन हैं। हवा कभी ठहरती नहीं, सागर कभी सूखता नहीं, चाँद व सूरज को छिपाया नहीं जा सकता तो क्या परदादी छिप सकती हैं? वे सभी की प्रेरणा थीं और अब भी यादों में वैसे ही समायी हुई हैं। ऐसी राजराजेश्वरी आत्मा को शत्-शत् नमन, वन्दन। ❖

आवश्यकता है

नर्सिंग स्टाफ (जी.एन.एम.) एवं फार्मासिस्ट (डी.फार्मेसी) की ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू में सेवा हेतु आवश्यकता है।

संपर्क करें : 09414144062

बायोडाटा भेजने के लिए ईमेल : ghrchrd@ymail.com

बाबा कहते

ब्रह्माकुमार नरेन्द्र शुक्ला, सुलतानपुर (उ.प्र.)

चोट किसी के दिल को देना, होती भारी भूल,
सबको सुख देते रहना है जैसे गुलगुल फूल।
बाबा कहते, बलशाली संकल्पों वाले बच्चे,
रहें लगन में मगन भले हों स्थितियाँ प्रतिकूल।।

ज्ञान जिसे कर्मों की गति का, रहता अचल-अडोल,
ब्रह्मावत्स वही जो शुभ सोचे, बोले मीठे बोल।
बाबा कहते, राजयोग जितना कर पाओ कर लो,
यही दिलाएगा सतयुग में राजाई अनमोल।।

अन्तर्मन का हाल बताती है चेहरे की कांति,
सुख के साधन बिना साधना, देते सदा अशान्ति।
बाबा कहते, पवित्रता के बावजूद यदि तुम में,
देहभान थोड़ा भी है तो नहीं मिलेगी शान्ति।।

कौन रथी इस शरीर रथ में, याद न जब रह जाता,
देह और इस देह का रिश्ता तब ही हमें लुभाता।
बाबा कहते, भूले से भी एक विकर्म तुम्हारा,
चट कर जाएगा सौ-सौ सत्कर्मों का खाता।।

जन्म दिया जिन संकल्पों को उन्हें जांचते रहना,
कभी पर-स्थिति, पर-चिंतन, पर-दर्शन में न उलझना।
बाबा कहते, मदद हमारी पाते वो ही बच्चे,
श्रेष्ठ कर्म-पथ पर आता जिनको हिम्मत से चलना।।

स्वतन्त्रता का अर्थ नहीं कि भूल जाए मर्यादा,
बल्कि नयापन लिए करें मर्यादा पालन ज्यादा।
बाबा कहते, इस रेखा का जो करता उल्लंघन,
माया रावण उस सीता को हर लेता, तड़पाता।।

रोज डॉक्टर, रोज दवा बन जाएगी मजबूरी,
हिंसा, क्रोध, तनावों से यदि बढ़ा न लोगे दूरी।
बाबा कहते, राजयोगियों का जीवन यूँ महके,
दूर-दूर तक जैसे महका करती है कस्तूरी।।

'पत्र' संपादक के नाम

दिसंबर, 2014 के अंक में 'दुख-सुख हैं कर्मजन्य' सम्पादकीय पढ़कर मन जागृत हो उठा कि जीवन में 'विकर्म करना और पछताना' यह नासमझ मानव का लक्षण है। शिव बाबा ने हमको ज्ञान-गंगा से पारस बुद्धि बनाया। सुकर्म करके अच्छे बीज बोयें, इसका फायदा अनेक जन्मों के लिए पायें – यह संदेश बहुत सुन्दर उदाहरणों के साथ स्पष्ट किया गया है और इससे मन को चेतावनी मिल गई है कि ''विकर्म न करें न दुख का बीज बोएँ''।

– सुनिता वी.रंगवाले,
नवनगर (कर्नाटक)

जनवरी, 2015 'स्मृति विशेषांक' प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को समर्पित है तथा बाबा के त्याग, करुणा, दया, ममता के बारे में बताता है। वंश परम्परा को छोड़ बाबा ने ज्ञान का कलश नारी को सौंपकर काबिल हस्तियों को मिशन सौंपी। बहन-भाइयों के अनुभव पढ़ने से पता चला कि एक-एक पर बाबा ने कितनी मेहनत की, कितना प्यार दिया। बाबा त्रिकालदर्शी हैं, उनके मुख से जो बात निकल जाती है, पूरी ज़रूर होती है। अनुभव पढ़कर लगा, मैं भी बाबा के साथ हूँ। बहुत आनंद आया। बाबा के बताए मार्ग पर चलकर हम सुंदर जीवन और नई दुनिया बना रहे हैं, यही उनके प्रति श्रद्धांजलि है।

– ब्रह्माकुमार अशोक,
ससाणेनगर, हडपसर (पूणे)

अक्टूबर अंक में सम्पादकीय 'निर्विघ्न जीवन' व लेख 'सार्वभौमिक बंधुत्व का आधार मित्रता' ज्ञानवर्धक लगे। सम्पादकीय में बताया गया कि तुम परमपिता की ओर एक कदम बढ़ाओगे तो वे तुम्हारी ओर 100 कदम बढ़ायेंगे। विघ्न हमें परमात्मा के समीप ले जाते हैं। विघ्नों से घबराना नहीं चाहिए, हर परिस्थिति में आगे बढ़ो। सच्चा मित्र वही है जो बुरे समय में काम आये। मित्रता की शक्ति शत्रुता से कहीं अधिक है। मित्रता के स्तम्भ हैं, परिचय, प्रेम, समर्पण और विश्वास। अन्य लेख भी ज्ञान से ओत-प्रोत थे।

– चन्डी प्रसाद उनियाल (शर्मा),
दिलशाद कालोनी, दिल्ली

दिसम्बर, 2014 अंक में 'जीवन रक्षक बैज' लेख की सत्य घटना यह इंगित करती है कि शिवबाबा सब बच्चों के रखवाले हैं। किसी न किसी रूप में, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष वे हमें मदद करते हैं। ऐसे प्रेरणादायक लेख मुद्रित करने के लिए बधाई।

– ब्रह्माकुमार प्रदीप, पटना

आवश्यक सूचना

पाठकगण को ज्ञात है कि 21 जून के दिवस को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (International Yoga Day) घोषित किया गया है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ऑस्ट्रेलिया में जी-20 अर्थात् विश्व के 20 बड़े देशों की मीटिंग में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव रखा था और उपस्थित सभी देशों ने इसे मंजूरी दी थी। तत्पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.) ने भी इस प्रस्ताव को पास किया और 190 से अधिक देशों ने इसे स्वीकार किया। 21 जून विशेष दिन है। उत्तर गोलार्ध में यह सबसे लंबा दिन है और दक्षिण गोलार्ध में यह सबसे छोटा दिन है।

ज्ञानामृत का जून अंक राजयोग विशेषांक होगा। लेखक भाई-बहनें राजयोग पर स्वरचित लेख भेज सकते हैं। राजयोग की अनुभूतियाँ, राजयोग द्वारा प्राप्तियाँ, राजयोग द्वारा जीवन परिवर्तन आदि अनुभव भी स्वीकार्य होंगे।

– सम्पादक

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 17

➢ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

संगमयुगी एवं सतयुगी सृष्टि के कारोबार में सब प्रकार का व्यवहार कैसे हो उसके बारे में हम चर्चा कर रहे हैं। पहले हमने लौकिक मैनेजमेन्ट गुरुओं के बारे में बातें कीं तथा पिछले लेख में कैसे परमात्मा परमशिक्षक के रूप में शिक्षायें दे रहे हैं, इसकी चर्चा की तथा उसे आगे बढ़ाते हुए इस लेख में मैं अपने अनुभव लिख रहा हूँ।

जब वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिचुअल ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन करना तय हुआ तब से प्यारे ब्रह्मा बाबा मुझे पत्र द्वारा शिक्षायें देने लगे कि ट्रस्ट का कारोबार आदर्श कैसे हो सकता है। उसी के संदर्भ में बाबा ने मुझे पत्र लिखा कि ईश्वरीय सेवा में ब्याज (interest) का कारोबार नहीं करना है अर्थात् ब्याज की कमाई के आधार पर यज्ञ का कारोबार ना चले। जो भी धन की प्राप्ति होती है उसे पहले सेवा में लगाना है और उसके बाद अगर बचत होती है तो उसे चल-अचल सम्पत्ति पर लगाना है। जब मैंने बाबा के ये महावाक्य पढ़े तब मुझे एहसास हुआ कि बाबा बहुत बड़े अर्थशास्त्री हैं। बाबा की कमाई द्वारा संचित धन से ही इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का आर्थिक कारोबार कई वर्षों तक चला। बाबा ने अपना पूरा ही तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा में समर्पित किया था।

ब्याज नहीं लेना इसके पीछे अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा भारी सिद्धान्त है जिसे समझने के लिए उसी प्रकार की दृष्टि चाहिए।

1930 में वैश्विक महामंदी आई थी, कारण था कि 1924 से किश्तों पर खरीदी (instalment buying) की पद्धति व्यापारियों ने शुरू की थी । पहले, जब तक पूरा पैसा इकट्ठा नहीं हो तब तक कोई व्यक्ति वस्तु खरीद नहीं कर सकता था। परंतु 1924 में जब किश्तों पर माल बेचना शुरू किया तो चल व अचल सम्पत्ति की मांग बहुत बढ़ गई। मांग बढ़ने के कारण व्यापारियों ने उत्पादन बढ़ाया और बहुत मकान आदि बनाये परंतु मांग अल्पकाल की थी। अत: जिनके पास पहले चल-अचल सम्पत्ति खरीद करने के लिए धन नहीं था उन्होंने उसे खरीद लिया। लेकिन जो उत्पादन व्यापारियों ने किया था वह बहुत ज्यादा था और बाद में उसकी मांग एकदम घट गई परिणामस्वरूप 1930 में देश-विदेश में आर्थिक महामंदी (Financial crisis) शुरू हुई। इस आर्थिक महामंदी का हल प्रसिद्ध अर्थशास्त्री केन्स (Keynes) ने सुझाया कि जब जनता द्वारा अचल सम्पत्ति की मांग नहीं होती है तो सरकार को जनकल्याण के कार्य में खर्च करने में आगे आना चाहिए। उदाहरण के लिए, सरकार रास्ते बनाये, ट्रेन, बस आदि पर खर्च करके कृत्रिम मांग (Artificial demand) बढ़ाये। सरकार अभी गोल्ड स्टैण्डर्ड (Gold Standard) का सिद्धान्त छोड़ दे और Deficit finance का कार्य शुरू करे अर्थात् सरकार जनहित कार्यों पर जो खर्च करे उस पर टैक्स आदि ले और जो घाटा हो उसके लिये कागज़ के नोट्स छापे और अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाये। आमदनी कम हो तो सरकार ज्यादा खर्च कर हर चीज की मांग (Demand) बढ़ा दे जिसे अंग्रेज़ी में कहते हैं – Government should inject more money into the circulation and thereby create more demand so that more job opportunities are created.

सरकार ने जब Deficit financing का कारोबार शुरू किया तब से अर्थव्यवस्था में एक नई समस्या खड़ी हुई जिसे मुद्रास्फीती (inflation) कहते हैं। इस मुद्रास्फीती के फलस्वरूप दिन-प्रतिदिन चीज़ों के दाम बढ़ने लगे और पैसे की कीमत कम होने लगी। जैसे 1915 से 1917 के बीच भारत का 1 रुपया 17 अमेरिकन डॉलर के बराबर था और आज 1 अमेरिकन डॉलर 58 से 60 भारतीय रुपये के बराबर है। इससे सिद्ध होता है कि कैसे मुद्रास्फीती के कारण चीज़ों के दाम बढ़ते गये और पैसे की कीमत कम होती गई। याद रहे कि मुद्रास्फीती का प्रभाव (Effect) 1934-35 से शुरू हुआ और यज्ञ की स्थापना 1937 के आसपास हुई।

कोई एक संस्था बैंक में मियादी जमा (Fixed Deposit) रखती है तो उस 1 वर्ष के लिए करीब 8 से 9% ब्याज मिलता है और Inflation के कारण पैसे की खरीद शक्ति कम हो जाती है अर्थात् सरल भाषा में कहें तो महंगाई बढ़ती जा रही है।

सरकार तो समाजकल्याण के कारोबार में खर्च करती रहती है। पहले तो गोल्ड स्टैण्डर्ड था अर्थात् सरकार जितने नोट छापती थी उतना सोना उसके पास होता था परंतु अभी सरकार नोट छापती रहती है और उसका सोना कम होता जा रहा है। परिणामस्वरूप मुद्रास्फीती दर (Inflation rate) प्रतिवर्ष 15 से 20% सामान्य हो गया है।

अब आर्थिक समस्या खड़ी होती है क्योंकि ब्याज मिलता है 8 से 9% और महंगाई 15 से 20% अर्थात् पैसे की कीमत इतनी कम हो रही है। इसके फलस्वरूप अगर 15% Inflation rate है और 8% ब्याज मिलता है तो 7 से 12% प्रतिवर्ष आर्थिक नुकसान होता रहता है अर्थात् ब्याज 8% मिलेगा और खर्च 15 से 20% ज्यादा प्रतिवर्ष बढ़ेगा। यह जो अर्थशास्त्र के बारे में मैंने बातें लिखीं उसे प्यारे ब्रह्मा बाबा ने मुझे सरल शब्दों में कहा कि बच्चे, ब्याज के पीछे नहीं जाना। अपने भाई-बहनों से हमें मदोगरी द्वारा जो भी धन प्राप्त होता है उसे सेवा में लगाओ और जो भी बचत होती है उसे चल-अचल सम्पत्ति खरीदने में लगाओ। धन को धन के रूप में न रखकर चल, अचल सम्पत्ति की खरीदी में धन का उपयोग करो। इस चल-अचल सम्पत्ति से हमें ईश्वरीय सेवा में संरक्षण (Protection) तथा बढ़ावा भी मिलता है।

दूसरा मिसाल, एक समय यह प्रश्न होता था कि यज्ञ के कारोबार का विकास माउंट आबू में करें या नीचे तलहटी, आबू रोड में करें। इस विषय पर काफी चर्चा हुई थी क्योंकि उस समय तक सुप्रीम कोर्ट का जजमेन्ट नहीं आया था अर्थात् पहाड़ी पर निर्माण कार्य करने की छुट्टी थी। आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे इसके बारे में पूछा। मैंने 2-3 दिन पूरा अभ्यास किया और उसके बाद चार लाइन का उत्तर दिया कि यज्ञ का विकास तलहटी में करना ज्यादा अच्छा होगा परंतु उसके लिए एक बात ज़रूरी है कि बापदादा की पधरामणि भी तलहटी में हो। मिलन के लिए अव्यक्त बापदादा तलहटी में आयेंगे तो ही यह विकास कार्य नीचे तलहटी में होना चाहिए। दादीजी ने यह पत्र आदरणीया दादी गुल्जार जी को जो उस समय दिल्ली में थे, भेजा। अव्यक्त बापदादा ने उत्तर दिया कि आबू रोड में अगर अच्छा स्थान बनेगा तो बापदादा तलहटी में आयेंगे। इसलिए भले ही आबू रोड में यज्ञ का विकास कर सकते हैं। बाबा ने हम बच्चों को खास श्रीमत दी कि बच्चों को कहना कि तलहटी में जितनी ज़मीन मिले, वह ले लें ताकि भविष्य का कारोबार नीचे अच्छी रीति हो सके। ज़मीन खरीदने की बात भी अव्यक्त बापदादा ने एक आदर्श अर्थशास्त्री के रूप में बताई क्योंकि उस समय हमने शांतिवन के लिए पहले 11 बीघा ज़मीन खरीद की और उस समय एक बीघा (1 बीघा अर्थात्

3025 वर्गगज) का रेट 9000/- रुपये था और आज आबू में 1 बीघा का क्या रेट चल रहा है, यह हमारे दैवी परिवार के भाई-बहनें जानते हैं। उदाहरण के तौर पर, 2 वर्ष पहले एक भाई को उनके 30 × 40 = 1200 वर्गफुट के प्लॉट के लिए 12 लाख रुपये मिल रहे थे और आज तो जमीन के भाव और भी बढ़ गये हैं। ज़मीन के भाव के आधार पर हम सब सोचें कि शांतिवन, मनमोहिनी कॉम्प्लेक्स, सोलार लैण्ड, संजय पार्क तथा तपोवन आदि-आदि ज़मीनें आज के भाव से लेनी हों तो कितना खर्चा करना पड़े, यह आइने जैसा स्पष्ट है।

अगर हम बैंक में पैसे रखते और उसके आधार पर यज्ञ का कारोबार करते तो चीज़ों के दाम बढ़ जाने से आमदनी कम हो जाती थी और सेवा के साधन नहीं बन सकते थे। प्यारे ब्रह्मा बाबा की श्रीमत का आदरणीया दादियों ने अच्छी रीति पालन किया। ब्रह्मा बाबा का एक महावाक्य, ''बच्चों को ब्याज के पीछे नहीं जाना है परंतु मदोगरी द्वारा जो भी धन-सम्पत्ति प्राप्त होती है, उसे सेवा में लगाओ और बचत किये हुए धन से चल-अचल सम्पत्ति खरीदकर ईश्वरीय सेवा में लगाओ।'' इससे यज्ञ को कितनी बड़ी प्राप्ति हुई है।

अर्थव्यवस्था का कारोबार बहुत बड़ा है। उदाहरण के तौर पर, ब्रह्मा बाबा का अपने पार्टनर के साथ बहुत अच्छा धंधा चलता था परंतु जब ब्रह्मा बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता हुई तब उन्होंने अपने भागीदार (partner) को लिखा ''अल्फ को मिला अल्लाह, बे को मिली बादशाही, आया तार...हुआ रेल का राही।''

इस प्रकार से ब्रह्मा बाबा ने अपने भागीदार को लिखा कि मैं अभी इस व्यापार से निवृत्त होना चाहता हूँ अत: धन-सम्पत्ति का बंटवारा करो। तो भागीदार ने बाबा को लिखा कि मैं तो हीरे-जवाहरात के कारोबार के बारे में इतना जानता नही हूँ इसलिए इसमें जो भी पैसा है वह मैं ले लेता हूँ और आप हीरे-जवाहरात ले लो। इस प्रकार उनके भागीदार ने बराबरी का बंटवारा किया। ब्रह्मा बाबा व्यापार और अर्थशास्त्र में बहुत ही अनुभवी थे इसलिए बंटवारे में उन्हें जो भी हीरे-जवाहरात मिले, उन्होंने धीरे-धीरे बेचे और यज्ञ चलाने का कारोबार करते गये। पैसा तो पैसे के रूप में रहा और पैसे में deficiency आती गई परंतु हीरे-जवाहरातों के दाम तो बढ़ते गये। उन बढ़ते हुये दाम के आधार पर यज्ञ की पालना होती गई या कहें कि ब्रह्मा बाबा की दूरंदेशी दृष्टि के आधार पर सिंध हैदराबाद तथा कराची में यज्ञवत्सों की पालना सहज रूप में हुई। यह बहुत बड़ा अर्थशास्त्र का नियम है।

ब्रह्मा बाबा ने अचल सम्पत्ति के बारे में भी बहुत बड़ा कारोबार किया। उन्होंने सिंध हैदराबाद में जसोदा भवन खरीद किया था जहां पर यज्ञ की स्थापना हुई। परंतु जब कराची में यज्ञ का स्थानांतरण हुआ तब बाबा ने कराची में सब मकान किराये पर लिये और हैदराबाद के सभी मकान बेच दिये। परिणामस्वरूप जब कराची से भारत में यज्ञ का स्थानांतरण हुआ तब यज्ञ को अचल सम्पत्ति का कोई नुकसान नहीं हुआ क्योंकि वहां पर अपने स्वामित्व की कोई अचल सम्पत्ति नहीं थी। जब भारत-पाकिस्तान का विभाजन हुआ तो कई सिंधी, मुलतानी तथा पंजाबी आदि पाकिस्तान छोड़कर भारत आये तो उन लोगों को अपनी ज़मीन-जायदाद वहाँ ही छोड़कर आना पड़ा और उन्हें बहुत नुकसान हुआ। परंतु यज्ञ के सारे मकान किराये पर होने से यज्ञ को कोई नुकसान नहीं हुआ। इसे ब्रह्मा बाबा की दूरंदेशी दृष्टि और अर्थनीति कहा जायेगा।

इस लेख का सार यही है कि अर्थव्यवस्था के बारे में ब्रह्मा बाबा की प्रेरणा को धारण करें। धन द्वारा अपनी धारणा और साधना बढ़ायें। बाबा ने धन को कभी भी माया नहीं कहा है परंतु जितना आवश्यक है उतना कमाना है और बाकी सेवा में लगाना है। ❖

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष..

स्वमान या पुरुष समान

➢ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

महाविद्यालय में पढ़ने वाली एक कन्या ने सवाल पूछा कि मेरे घर में, भाई और मेरे बीच पक्षपात होता है। भाई को पढ़ने के लिए देहली भेज दिया गया जबकि मेरी इच्छा होते हुए भी मुझे बाहर जाकर पढ़ने का अवसर नहीं दिया गया, मैं इस पक्षपात का सामना कैसे करूँ?

लड़के और लड़की के बीच भेदभाव की खाई, वर्तमान काल में काफी पाट दी गई है, फिर भी कहीं प्रत्यक्ष और कहीं अप्रत्यक्ष – यह अब भी बनी हुई है। वर्तमान भौतिक युग से थोड़ा पीछे मुड़कर देखें तो पाएंगे कि अतीत में कन्या, माता अथवा समग्र नारी समाज का स्थान बड़ा पूजनीय-वंदनीय रहा है। वैदिक काल में कन्याओं को हीरा माना जाता था और यह कहा जाता था, ऐसा हीरा चाहे कहीं भी हो, सम्मान के योग्य होता है। उस काल में कन्याओं, माताओं के नैसर्गिक गुणों के कारण उनके प्रति जो सम्मानजनक प्रथाएँ बनीं वो आज भी संस्कृति में अक्षुण्ण बनी हुई हैं।

गौरवमय और अछूते सांस्कृतिक अधिकार

वर्तमान भौतिक युग में भी कन्याओं-माताओं के पास कुछ ऐसे गौरवमय और अछूते सांस्कृतिक अधिकार हैं जिन्हें समय की मार मिटा नहीं सकी है और न ही किसी नर ने उन अधिकारों को छीनने का प्रयास किया है। आज भी कन्या का जन्म होता है तो लोगों के मुख से निकलता है, घर में 'देवी' आई है जबकि पुत्र के जन्म पर कोई नहीं कहता कि घर में 'देवता' का आगमन हुआ है। नारी के ससुर घर में पाँव रखने पर उसे 'लक्ष्मी' माना जाता है पर नर को कहीं भी 'नारायण' रूप में नहीं देखा जाता। भारत में वर्ष में दो बार आने वाले नवरात्रों में भी कन्या-पूजन का ही महत्व है, कुमार-पूजन का नहीं। धूमिल होती संस्कृति के बीच आज तक बरकरार ये प्रथाएँ इस बात की ओर इशारा करती हैं कि समाज नारी को अधिक पवित्र, अधिक पूजनीय, देवत्व के अधिक निकट और अधिक अध्यात्म उन्मुख मानता है। कन्याओं को यदि हमारी परम्पराएँ अध्यात्म के अधिक निकट और पवित्रता, निर्मलता, स्वच्छता, निष्कपटता का स्वरूप देखती हैं तो यह कन्याओं के लिए गौरव की बात है। वे अवश्य इस गौरव को स्वीकार कर अपने को गौरवान्वित महसूस करें।

सन्तुलन के लिए आवश्यक है भिन्नता

प्रकृति ने नर-नारी को कुछ भिन्नताएँ ज़रूर दी हैं अर्थात् एक को, एक क्षेत्र के ज़्यादा अनुकूल बनाया और दूसरे को, दूसरे क्षेत्र के ज़्यादा अनुकूल बनाया ताकि सामाजिक सन्तुलन बना रहे। समाज नारी को अबला मानता है और पुरुष को सबल। बीस वर्ष का एक भाई जितना भार उठा सकता है, 20 वर्ष की एक बहन उतना नहीं उठा सकती, इस अर्थ में वह अबला अर्थात् कम बलशाली है। परन्तु एक घोड़ा, नर से भी ज़्यादा वज़न उठा सकता है, घोड़ा ही क्यों, और भी कई जानवर हैं जो नर की भेंट में कई गुणा बोझ उठा सकते हैं, तो क्या नर को उनके आगे अबल माना जाए? नहीं। पशु की भेंट में मानव के पास बौद्धिक बल है और इसी से वह पशु पर आधिपत्य करता है। घोड़े, हाथी जैसे शक्तिशाली को भी पालतू बना लेता है। नारी के पास शारीरिक बल निश्चित रूप से कम है पर नैतिक बल, आध्यात्मिक बल और मानसिक बल अवश्य ही पुरुष की भेंट में अधिक है। इसीलिए नैतिक, आध्यात्मिक क्षेत्रों में उसका पूजन अधिक है और शारीरिक,

बौद्धिक बल वाले क्षेत्रों में जैसे युद्धों में, आविष्कारों में या अन्य भौतिक निर्माण कार्यों में नर का अधिक महत्व है, इस प्रकार यह सन्तुलन रखा गया है।

रोका गया धर्म का अगुआ बनने से

इतिहास पर नज़र डालें, पिछले 2500 वर्षों से धर्म, आध्यात्मिकता पर पुरुषों का वर्चस्व रहा है। नारी को अपने इस स्वाभाविक अधिकार से भी वंचित रखा गया है। पंडित-पुजारियों ने शास्त्र पढ़ने पर रोक लगाई और बहाना यह दिया कि कम पढ़ी-लिखी होने के कारण इसका संस्कृत उच्चारण ठीक नहीं है। उच्चारण से ज़्यादा तो आचरण का महत्व होता है जिसमें वह अव्वल है पर फिर भी पुरुष प्रधान समाज में उसे धर्म की अगुआ बनने से रोका गया। मन्दिर-देवालय जाने पर रोक घर के पुरुषों ने लगाई और कई तथाकथित ऊँचे घरानों ने तो घर में ही मन्दिर बनाकर दे दिया ताकि घर से बाहर ना जाए। इसका परिणाम कोई शुभ नहीं निकला। धर्म के बल से रहित वह ऐसी माँ सिद्ध हुई जिसने संस्कारहीन और मनोबलहीन सन्तानों से संसार को पाट दिया और समाज समस्याग्रस्त होता गया।

अनुकरण की बजाय बनें उदाहरण

समय ने करवट बदली। आज के युग में उसे वे सभी अधिकार प्राप्त हैं जो पहले उससे छिने हुए थे। कानूनन उसकी बेड़ियाँ टूट चुकी हैं। संविधान में नर-नारी के हक बराबर हैं परन्तु वह अपनी स्वतन्त्रता का इस्तेमाल कहाँ कर रही है? वह इसका इस्तेमाल नर की बराबरी करने में कर रही है। इसमें उसका दोष नहीं है। अभी तक उसे दूसरे दर्जे का माना जाता रहा। जब पहले दर्जे की मानी जाने लगी तो सबसे पहला काम वो यही करना चाहती है कि इस पहले दर्जे वाले के समान बना जाए। उसकी नज़रों में वही आगे है, वही आदर्श है इसलिए उसी की समकक्षता उसका पहला लक्ष्य है। इसीलिए उसने अपना रहन-सहन, पहनावा और कार्यक्षेत्र पुरुषों जैसे बना लिए हैं। परन्तु नारी में इतनी शक्ति है कि वह पुरुष की बराबरी की बजाय उससे आगे जा सकती है। उसका अनुकरण करने की बजाय उसके लिए उदाहरण बन सकती है परन्तु कैसे? जब वह आध्यात्मिक ज्ञान और शक्तियों को जीवन में उतारे और उनका प्रदर्शन करे तब नारी अपने मूल गुणों में, पुरुष की भेंट में परमपुरुष के ज़्यादा निकट है। परमपुरुष अर्थात् परमात्मा शिव की तरह वह भी दया, स्नेह, शान्ति, क्षमा की खान है। भक्तिमार्ग की यादगारों में भगवान शिव पर बलि चढ़ाने के बाद सर्वाधिक बलि देवियों पर ही चढ़ाई जाती है। वह तो बलि लेने वाली है, न कि किसी पर बलि चढ़ने वाली।

दिल छोटा करके आन्तरिक शक्तियों को ग्रहण न लगाएँ

प्रारम्भ में हमने जिस कन्या का उदाहरण लिया, बात उस एक की नहीं है। भारत की 127 करोड़ जनसंख्या और भारत से बाहर की लगभग 6 अरब जनसंख्या भिन्न-भिन्न पारिवारिक-सामाजिक परिस्थितियों में जी रही है। किसी कन्या को अपने मन के प्रतिकूल वातावरण का सामना करना पड़े इसके पीछे पक्षपात के अलावा धन, साधनों की कमी, सुरक्षा, माता-पिता की चिन्ता, लोकलाज आदि कई कारण हो सकते हैं। हम कारणों को न देख उन्हें निवारण करने का सोचें। अपने घर की स्थितियों को समझकर उन के प्रति सहयोगी बनते हुए अपने को ढालें। हतोत्साहित भी न हों और आसानी से पूरी न हो सकने वाली अपेक्षाएँ रखकर अपने मन को भारी भी न करें। दिल छोटा करके अपनी आन्तरिक शक्तियों को ग्रहण न लगाएँ। परिस्थितियों को बदलने की नाकाम कोशिश की बजाय खुद को बदल डालें। क्या ही अच्छा हो, यदि हम तथाकथित कम सुविधाजनक स्थितियों में रहकर भी पढ़ाई में अव्वल आकर दिखाएँ। सुविधाओं के बल से कुछ ऊँचा किया तो क्या

बड़ी बात है, बड़ी बात तब है जब कम सुविधाओं में रहकर बहुत ऊँचा कर दिखाएँ। कहा गया है, पुत्र पिता के भाग्य पर जीता है परन्तु कन्या को अपनी राहें खुद बनानी पड़ती हैं।

हमें अपने जैसा ही रहना है

परिवर्तन सबको अच्छा लगता है। दबी, घुटी नारी के स्थान पर साहसी और हर क्षेत्र में अपनी धाक जमा लेने वाली नारी अच्छी लगती है। लेकिन उसे आत्म अवलोकन करना होगा कि यह साहस और धाक केवल ऊपरी न हो। उसे अन्दर से साहसी और मज़बूत बनना है। एक महिला परिचर्चा में कई महिलाएँ बैठी थीं। उनमें से अधिकतम का पहनावा भाइयों जैसा था। उन्होंने खुलकर अपने अधिकारों की पैरवी की और कहा, हम पुरुष से किसी भी मायने में कम नहीं हैं और न कम रहना चाहती हैं। इतने में सभा के बीच एक कॉक्रोच घुस आया जिसे देख सभी बहनें उठ कर सभागृह के अलग-अलग कोनों की ओर भागती नज़र आईं। विचार कीजिए, एक छोटे-से काकरोच ने हमारे साहस को चुनौती दे डाली। नर-सभा होती तो कोई इस तरह डर कर कोनों में ना सिकुड़ता। कॉक्रोच का आना तो एक उदाहरण है परन्तु जीवन में आने वाली भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में हम अभय रह सकें, तब बनेंगे हम सही अर्थों में साहसी। हम पहनावे या अन्य स्वतन्त्रताओं में बराबरी करने से पहले आन्तरिक गुणों में बराबरी करें। हमें किसी के जैसा नहीं बनना पर अपने जैसा ही रहना है। हमें पुरुष समान नहीं बनना पर अपने स्वमान में रहना है। हम अपने व्यक्तित्व को गुणों से भरें, आन्तरिक गुणों को समझें और सीखें।

अन्धानुकरण न करें

हम पुरुषों को देख-देख उनका अनुकरण करते हुए देर रात तक पार्टियों में रहें, उनका अन्धानुकरण करते हुए अखाद्य खाएँ-पीएँ, उनकी तरह अकेले ही असमय आएँ-जाएँ, यह कहकर कि ये करते हैं तो हमें हक क्यों नहीं? इससे तो हमारी स्वाभाविक दिव्यता और अधिक दब जाएगी और जिसका अनुकरण करेंगे वह आखिर गुरु ही तो रहेगा। हम उसके चेले बन जाएंगे। विधाता ने तो नारी को गुरुपद देकर संसार में भेजा। प्रथम गुरु-मातागुरु – यह कहा गया है। हम अपने गुरुपद के ऊँचे स्वमान को छोड़कर अन्धानुकरण करेंगे तो न रहेंगे इधर के, न उधर के अर्थात् न अपने गुणों को जगा पाएंगे न दूसरों के गुणों को ले पाएंगे।

बराबरी न करें, बदलाव लाएँ

बाहरी बराबरी किए बिना, अन्दर से मर्दानी शक्ति धारण किए हुए झाँसी की रानी हमारे सामने उदाहरण है। वह साड़ी पहने, अपनी पीठ से बच्चे को बाँधे हुए, दुश्मन को कँपकँपा देने वाला युद्ध करती दिखाई गई है। श्री दुर्गा देवी, श्री काली देवी आदि देवियों के भी दिव्य साहस को देखिए। हज़ारों-हज़ार राक्षसों से घिरी होते भी वे निर्भय हैं। उन्होंने पहनावा आदि कुछ भी बाहरी परिवर्तन नहीं किया, उनकी तरह धोती-कुर्ता नहीं पहना, परम्परागत पोशाक साड़ी पहने-पहने ही असुरों का संहार कर डाला। पोशाक का उदाहरण इस स्पष्टीकरण के लिए दिया कि बाहरी स्थितियों के परिवर्तन से ज़्यादा ज़रूरी है मन का बदलाव, मन को सुविचारों से भरना। दीन-हीन विचारों की जगह फौलादी विचार अर्थात् दृढ़ता के विचार बनाना। अत: बराबरी की होड़ में न आकर सकारात्मक बदलाव लाइये। अपने स्वमान को पहचानिए। स्वमान अर्थात् आत्मा का मान। आत्मा के मूल गुण ही उसके मान हैं। ज्ञान, पवित्रता, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम, शक्ति ये सब आत्मा के मान हैं। इन गुणों को जीवन में धारण कर ज्ञान की देवी, पवित्रता की देवी, सुख की देवी, शान्ति की देवी, शक्ति की देवी.... बनिए, संसार के सभी सुख स्वत: कदमों में आ जाएंगे। स्वमान में टिकने से ईश्वर पिता की दुआएँ भी स्वत: मिल जाती हैं जो जीवन को और भी सशक्त और निर्भय बना देती हैं। ❖

कैंसर शाप नहीं, वरदान बना

➢ ब्रह्माकुमारी मंगला, हिंजवडी (महाराष्ट्र)

बात सन् 1999 की है। उम्र मात्र 23 वर्ष थी। माँ-बाप शादी के लिए दबाव डाल रहे थे। पर हमने बचपन से तय किया था कि शादी नहीं करेंगे। आम आदमी जैसा जीवन पसंद नहीं था, सोचा था, समाज सेवा करेंगे, दूसरों की ख़ातिर जियेंगे। मई, 1999 में मेरा पेट बड़ा दिखने लगा। सोनोग्राफी करवाई तो पता चला कि दायीं ओवरी में गाँठ है। डॉक्टर ने कहा, तुरन्त आपरेशन करना पड़ेगा। दो घण्टे आपरेशन चला। इसके बाद पता चला कि विषारी कैंसर है और सेकेण्ड स्टेज में है। कैंसर विशेषज्ञ ने कहा, एक कोशिश के तौर पर आप किमो थेरेपी ले लो। किमो के साइड इफेक्ट भी बहुत ज्यादा थे। फिर भी हम तैयार हो गए। खुशी से दवाई लेने लगे। उन दवाइयों से तकलीफ इतनी होती थी कि शब्दों में वर्णन करना असंभव है। दवाइयाँ पूरी होने के पहले मैं और मेरी छोटी बहन ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आधे घण्टे में प्रदर्शनी समझ के आये। उस वक्त मुझे शिव और शंकर के भेद वाला चित्र बहुत पसंद आया।

छह मास तक ससून हास्पिटल में दवाई लेने के बाद डॉक्टर बोले कि अब आपको अंत में एक बार स्कैन करना पड़ेगा। मेरी मानसिकता अब कुछ भी सहने की नहीं रही थी। स्कैन के वक्त रिएक्शन बहुत आता था जैसे कि उल्टी होना, चेहरे पर धब्बे आदि। तब मेरी बहन ने कहा कि मैं आपके साथ हूँ, उनको ईश्वरीय ज्ञान था। उन्होंने कहा, इतनी तकलीफ उठाई है तो अब लास्ट में स्कैन के वक्त आप कहना, बाबा, मैं आपकी गोद में हूँ। जैसे ही इन्जेक्शन लगाया, मैंने कहा, शिवबाबा, मैं आपकी गोद में हूँ। तभी फरिश्ते रूप का बहुत सुन्दर साक्षात्कार हुआ। मेरा यह स्थूल शरीर तो मशीन के अंदर था पर लाइट का शरीर जैसे किसी ने ऊपर खींच लिया था, यह मुझे स्पष्ट दिखाई दिया। डॉक्टर भी हैरान रहे कि कैसे कुछ भी रिएक्शन नहीं हुआ। उसके बाद जैसे ही डिस्चार्ज मिला, सबसे पहले हिंजवडी सेवाकेन्द्र पर जाकर सात दिन का कोर्स किया। बाबा के बहुत अनुभव हुए। तब से आज दिन तक बाबा में 100 परसेंट निश्चय रहा। प्यारे बाबा ने इतना प्यार दिया, इतने अनुभव कराए कि उन्हें शब्दों में व्यक्त करना असंभव है।

एक साल बाद घरवाले शादी के बारे में कहने लगे। हमने उन्हें बताया कि आप समझ लीजिए, बीमारी में

आपकी वह बेटी चली गई। अब नया जन्म हुआ है केवल परमात्मा की सेवा के लिए। डॉक्टरों की राय से सन् 2000 में तथा 2004 में दो आपरेशन और हुए। सन् 2004 में मधुबन में टीचर्स ट्रेनिंग में आने का सौभाग्य मिला। तब से लेके आज दिन तक हिंजवडी सेवाकेन्द्र पर समर्पित रूप से सेवायें दे रही हूँ। सन् 2006 में मुम्बई से हैदराबाद पदयात्रा में योगदान दिया। बहुत ही अविस्मरणीय अनुभव रहा।

अन्तिम समय के आठ पेपरों में से मुझे बीमारी के पेपर से बाबा मिले। इतनी भयंकर बीमारी परमात्मा पिता के कारण शाप नहीं बल्कि वरदान महसूस हुई। कल्प-कल्प का भाग्य बनाने का मौका मिला। अंत में इतना ही कहूँगी –

'धन्य-धन्य हो गए,
हम प्रभु को भा गए।
गा रही है ज़िन्दगी,
काम उनके आ गए।।

आदर्श पुरुषार्थी बनने के लिए दो शब्द 'हाँ जी'

➢ ब्रह्माकुमार विनायक, पांडव भवन, आबू पर्वत

स्वप्न देखना और उसे साकार करने के लिए जीवन भर पुरुषार्थ करते रहना मानव का सहज स्वभाव है। महापुरुषों का जीवन चरित्र पढ़ने वाला हरेक व्यक्ति यह स्वप्न अवश्य देखता है कि वह भी इतिहास के पृष्ठों को शृंगारने योग्य आदर्श व्यक्ति बने, सदियों तक समाज उसे याद करे। हरेक ईश्वरीय विद्यार्थी भी यह स्वप्न सदा देखता है कि निश्चय में ब्रह्मा बाप समान, सत्यता में गांधी जी समान, प्रेम में मदर टेरेसा समान मैं भी विशेष पुरुषार्थ करूँ जो दैवी परिवार के लिए आदर्श बन जाऊँ।

इस स्वप्न को साकार करने के प्रयास में कई बार एक निराशा पुरुषार्थी के दिल को भारी कर देती है कि ज्ञान समझाना, क्लास कराना आदि मुझे नहीं आता, धनवान भी नहीं हूँ, कोई विशेष कला भी नहीं है तो फिर आदर्श कैसे बनूँ?

हे पुरुषार्थी! निराश होने की ज़रूरत नहीं। हम सब के लिए एक खुशखबरी है। इस कल्याणकारी ड्रामा में दो अक्षर का एक सरल मार्ग है जिस पर चलने से मानव आदर्श और इतिहास प्रसिद्ध बन सकता है। पौराणिक कथाएँ, मानव इतिहास और ईश्वरीय यज्ञ का इतिहास भी इस बात को प्रमाणित करता है। वे दो अक्षर हैं 'हाँ जी'।

पौराणिक कथाओं में 'हाँ जी' का महत्व

एक हिम्मतवान और प्रतिभाशाली भील बालक धनुर्विद्या में कुशलता पाने की आश रखकर पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य के पास पहुँचा। आचार्य ने स्पष्ट कहा कि वह केवल क्षत्रिय राजकुमारों को ही शिष्य स्वीकार करेगा, भीलकुमार को नहीं। बालक निराश तो हुआ लेकिन उसका उद्देश्य दृढ़ था। गुरु जी की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर वह धनुर्विद्या का अभ्यास करने लगा और कुछ ही दिनों में पारंगत हो गया। समय बीतने पर, धनुर्विद्या में अर्जुन से भी अधिक तीक्ष्णता को पाये हुये भील बालक को देख द्रोणाचार्य भी चकित रह गए। द्रोणाचार्य ने अर्जुन को विश्व का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाने का वचन दिया हुआ था इसलिए एकलव्य से गुरुदक्षिणा में दाएँ हाथ का अंगूठा मांगा। एकलव्य ने देरी नहीं की, हाँ जी कहा और सहर्ष अंगूठा काटकर गुरु के सामने रख दिया। महाभारत में इतने अतिरथी, महारथी होते हुए भी यह छोटा-सा बालक, जिसकी भूमिका बहुत ही अल्प समय की थी, इतना आदर्श कैसे बना? 'हाँ जी' शब्द ने उसको प्रसिद्ध और आदर्श बनाया।

'हाँ जी' ने इतिहास रचाया

छत्रपति शिवाजी का नाम भारतीय इतिहास में विशेष स्थान रखता है। शिवाजी के साथ तानाजी का नाम भी बहुत प्रशंसनीय है। तानाजी मालुसरे शिवाजी महाराज के सेनापति थे। स्वराज्य स्थापन करते हुए, शिवाजी की माता जीजाबाई को महाराष्ट्र के प्रसिद्ध किले कोंढ़ाणा (मुगलों के अधीन) पर जीत पाने का संकल्प आया। उन्होंने यह संकल्प शिवाजी महाराज के सामने रखा। मातृ आज्ञापालक शिवाजी महाराज ने तुरंत तानाजी मालुसरे को कोंढ़ाणा किले पर आक्रमण करने का आदेश दिया। उस समय तानाजी अपने ज्येष्ठ पुत्र के विवाह समारोह में व्यस्त थे। शिवाजी महाराज के आदेश से तानाजी विचलित नहीं हुए। 'हाँ जी' कहकर तानाजी ने तुरंत ही सेना के साथ कोंढ़ाणा की तरफ प्रस्थान किया। अति कठिन और घनघोर युद्ध के बाद किले पर विजय तो प्राप्त हो गई लेकिन वीर तानाजी को प्राण त्यागने पड़े। परममित्र की जुदाई के प्रति शिवाजी महाराज के मुख से उद्‌गार निकला, 'गढ़

आला पण सिंह गेला (किला आया लेकिन सिंह चला गया)।' उन्होंने उस किले का नाम सिंहगढ़ रखकर तानाजी का स्मारक बना दिया।

दुनिया में हज़ारों सेनापतियों ने युद्ध जीते हैं, सैकड़ों ने जान गंवाई है लेकिन उन सबके नाम इतने प्रसिद्ध नहीं हुए, केवल तानाजी ने इतनी प्रसिद्धि पाई, क्यों? क्योंकि पुत्र का विवाह जीवन में एक ही बार मिलने वाला अति महत्वपूर्ण प्रसंग होता है जिसमें पिता की उपस्थिति अनिवार्य है। ऐसी द्वंद्वपूर्ण परिस्थिति में भी तानाजी ने 'हाँ जी' कहकर आज्ञा का पालन किया। इस 'हाँ जी' ने उन्हें इतिहास प्रसिद्ध आदर्श पुरुष बनाया।

'हाँ जी' के पाठ से ही राधा बनी लक्ष्मी

परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमतानुसार मानव से देवमानव बनने वाले पुरुषार्थ में पास विद ऑनर बनकर सतयुगी सृष्टि में लक्ष्मी पद ग्रहण करने वाली मम्मा या जगदंबा सरस्वती जी (राधा) का मुख्य पुरुषार्थ ही 'हाँ जी' का पाठ था। बाबा का कहना और मम्मा का करना, एक समान था। भविष्य में ऊँच पद पाने की विधि है भगवान की श्रीमत पर अर्थात् हर इशारे पर सदा 'हाँ जी' रहना। इस राज़ को जीवन भर अपनाने के कारण एक सामान्य नारी वर्तमान में जगदंबा सरस्वती बनी और भविष्य में श्री लक्ष्मी बन धन की अधिदेवी बनी। इसी 'हाँ जी' के मंत्र से ही मम्मा ने ईश्वरीय पढ़ाई में प्रथम स्थान ग्रहण कर संगमयुग के इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा।

'हाँ जी' से पुरुषार्थ का मार्ग सरल

पद्मापद्म भाग्यशाली बनने का आधार है शिवपिता की श्रीमत पर चलना। चलना अर्थात् हर कदम में 'हाँ जी' उच्चारना। बाबा कहते हैं, उड़ती कला में तीव्र गति से आगे ले जाने वाला यंत्र है आशीर्वाद या दुआयें। दुआ पाने का सरल एवं सहज मार्ग है 'हाँ जी' का आचरण। सदा के लिए एकता के सूत्र में बंधने का एकमात्र उपाय है 'हाँ जी'। गुण और शक्तियों का खजाना खोलने की चाबी है 'हाँ जी'। जैसे शक्तिशाली ब्रेक वाहनों को दुर्घटना से बचाता है वैसे माया से बचने के लिए व्यर्थ और अयथार्थ संकल्प-बोल और कर्म को शीघ्र पूर्णविराम (Full stop) लगाना आवश्यक है और इस अभ्यास की शुरूआत 'हाँ जी' शब्द से होती है। हर परिस्थिति में, बापदादा एवं निमित्त आत्माओं द्वारा मिलने वाले हर इशारे के प्रति राज़ी रहना। राज़ी रहने के अभ्यास का आरंभ भी 'हाँ जी' के बोल से ही होता है। कभी-कभी निमित्त आत्माओं से मिलने वाली सेवा के प्रति संकल्प उठता है कि मैं यह सेवा कर सकूँगा या नहीं? लेकिन शिवबाबा का यह वायदा है कि हिम्मते बच्चे, मददे बाप। अत: एक शब्द 'हाँ जी' की ही ज़रूरत है। 'हाँ जी' कहते ही उस सेवा की ज़िम्मेदारी बाबा उठा लेते हैं।

धूल में दबे हीरे जैसी विशेषताएँ

मान लीजिए, संगमरमर से बना हुआ एक नया, सुन्दर, विशाल मकान हो, सोने-चांदी की चीज़ों से सजा हुआ हो, उसके अन्दर छत्तीस प्रकार के व्यंजन हों लेकिन आस-पास कहीं भी पानी न हो, तो कहिए, क्या उस मकान से किसी को सुख मिलेगा? लोग वहाँ रहने के इच्छुक होंगे? असंभव है! वैसे ही तन से दुरुस्त, धन से भरपूर, बुद्धि से सृजनशील और कलाओं से संपन्न होते हुए भी कई आत्माओं की ये सब विशेषताएँ धूल में दबे हीरे के समान हैं क्योंकि निमित्त आत्मा के साथ 'हाँ जी' होकर नहीं चलते हैं, मनमत या परमत के वशीभूत रहते हैं।

स्वयं भगवान ने हमें चुना, पांच हज़ार साल से बिछुडे हुए उस भगवान के अवतरण को हम ने भी पहचाना, उनकी श्रीमतानुसार विश्वसेवा के लिए अपना जीवन दिया, ज्ञान-गुण-शक्तियों में परमात्मा समान बनने की महत्वाकांक्षा रखकर पुरुषार्थ के मार्ग पर चलना भी शुरू किया... यह सब किसलिए किया? क्या दूसरों का विरोध करने के लिए?

(शेष..पृष्ठ 26 पर)

हिम्मत

➢ ब्रह्माकुमारी मेहा, ग्लोबल हॉस्पिटल नर्सिंग स्कूल, आबू रोड

हिम्मत की शक्ति बहुत बड़ी है। यह एक ऐसी शक्ति है जो गिरे हुए आदमी को खड़ा कर सकती है। हिम्मत से असम्भव कार्य भी संभव हो जाते हैं और मंज़िल तक पहुँचना आसान हो जाता है। हिम्मत की शक्ति कहीं बाहर से खरीदी नहीं जा सकती बल्कि यह हमारे ही अन्दर विद्यमान है। हाँ, कई बार इस पर हमारे कमज़ोर संकल्पों की परत जमने से यह सुप्त अवस्था में चली जाती है। इसी कारण हम कमज़ोर पड़ जाते हैं। आसान से आसान कार्य को सोच-सोच कर पहाड़ जैसा मुश्किल बना देते हैं और उस कार्य की तकदीर में सदाकाल के लिए असम्भव शब्द लिख देते हैं।

हिम्मत है पहला गुण

हिम्मतहीन सोच भय को जन्म देती है, जो आगे चल कर तरक्की के मार्ग में बाधा बन जाती है। अगर हम इतिहास पर नज़र डालें, तो पता चलेगा कि आज तक जितने भी महान व्यक्ति हुए जैसे महात्मा गांधी, भगत सिंह, अब्दुल कलाम....आदि ने अपनी हिम्मत को जागृत कर न जाने कितने निर्दोष लोगों को अत्याचारों से बचाया और संसार को उजाले की तरफ ले जाने का कदम उठा कर इतिहास के पन्नों में अपनी एक अलग पहचान बना डाली। कहा भी जाता है – ''मानव के सभी गुणों में हिम्मत पहला गुण है क्योंकि यह सभी गुणों की ज़िम्मेवारी लेता है।''

साथी है सर्वशक्तिवान

अब प्रश्न यह उठता है कि हम अपने अन्दर हिम्मत का गुण जागृत कैसे करें। इसे जागृत करने के लिए अपने आपको कुछ विचार दें – सबसे पहले यह निश्चय हो कि सर्वशक्तिवान भगवान मेरा साथी है। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ। विश्व को परिवर्तन करने की ज़िम्मेवारी भगवान ने मेरे कंधों पर भी रखी है। रोज़ अमृतवेले सोचें, अनुभव करें, भगवान सिर पर हाथ रख बोल रहे हैं, सफलता तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

हिम्मतवर्धक बातें पढ़ें

हिम्मतवर्धक, अच्छी, श्रेष्ठ बातों का पठन भी लाभप्रद है। हिम्मतवर्धक गीतों का चयन कर उन्हें सुनने से भी यह गुण उजागर हो जाता है। आपने अब तक जो हिम्मतवर्धक कार्य किए हैं उनकी वीडियो बना कर अपने पास रखें। जब महसूस करें कि मनोबल कम हो रहा है, उसे देखें। हिम्मतवान लोगों की कहानी पढ़ने की आदत डालें। हिम्मतवर्धक स्लोगन घर की दीवार या कर्मक्षेत्र पर लगाएँ ताकि उन्हें रोज़ाना पढ़ते रहें और अपनी हिम्मत को कायम रखें। भगवान ने बहुत अच्छा स्लोगन दिया है, हिम्मते बच्चे मददे बाप (God helps those who help themselves)'।

हिम्मत रखने से फ़ायदे

हिम्मत रखने से जीवन से भय की समाप्ति हो जाएगी और हम सदैव बेफिकर रहेंगे। हर कार्य में हमारी विजय निश्चित हो जायेगी। एक सफल खिलाड़ी का कहना है, ''मैं अपनी जिंदगी में बार-बार असफल हुआ हूँ अब इसलिए मैं सफल होता हूँ। कुछ भी करने से हिचकिचाना नहीं चाहिए। हमारी ज़रा-सी हिम्मत हमारे आत्मविश्वास को कई गुना बढ़ा सकती है।'' जीवन में बहुत सारी कठिनाइयाँ आती हैं और हम उनसे डर कर हार मान लेते हैं पर यह नहीं जानते कि उन कठिनाइयों रूपी पहाड़ के आगे बहुत सुन्दर विजय का सूरज हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। हमें कठिनाइयों को न देख, हिम्मत रख निरन्तर आगे बढ़ने के लिए तत्पर रहना चाहिए। ❖

ईश्वरीय शक्ति का चमत्कार

➢ ब्रह्माकुमारी रानी, भोपाल (म.प्र.)

मैं एक छोटे-से गाँव जाखलौना (उ.प्र.) के गरीब परिवार से हूँ जहाँ पर आज भी बहनों को बहुत ज्यादा पढ़ाते-लिखाते नहीं हैं। वहाँ की सोच आज भी ऐसी है कि बहनों को पराये घर जाकर चूल्हा ही तो फूंकना है जिसके लिए पढ़ाई की ज़रूरत नहीं है। छोटी उम्र में शादी कर दी जाती है। मेरी लौकिक दीदी की शादी जब वो ग्यारह साल की थी, हो गई थी। मैं बचपन से ही बहुत शैतान थी। जब घर से बाहर जाती थी तो वापस आती नहीं थी, लाई जाती थी। बच्चों को मारना, धक्का देना, किसी का सामान तोड़ देना, ये मेरे खेल थे। जिस बच्चे के साथ खेलती थी उसको कभी जीतने नहीं देती थी। अगर जीत गया तो मार खाकर घर जाता था। घर वाले और पड़ोसी सब मुझसे बहुत परेशान थे।

कुछ हटकर करना है

सपने सब देखते हैं। पर जब से मैंने सपनों को समझा तो एक ही बात सामने आती थी कि मुझे कुछ हटकर करना है। पर क्या करना है वो तस्वीर स्पष्ट नहीं थी। जब ग्यारह साल की हुई तो घर में सबको लगा कि अब इसकी शादी कर देनी चाहिए। इसी बीच हमारी लौकिक माँ को ईश्वरीय ज्ञान मिला और मेरा भी ब्रह्माकुमारी केन्द्र में आना-जाना होने लगा, फिर वहाँ रहने भी लगी। मेरी माँ मुझे बहुत प्यार करती है और दुनिया की एक मात्र ऐसी माँ है, जब भी मुझे गोद में लेती, सोचती, हे भगवान, यह मर जाये। हम सभी जानते हैं कि माँ के दिल से निकली दुआ या बद्दुआ से कोई नहीं बचा। मैं भी नहीं बची। मैं भी मर गई अर्थात् जीते जी भगवान की हो गई।

ज्यादा पाने के लिए ज्यादा करने का उमंग

जब मैं सिंगरौली के ब्रह्माकुमारी आश्रम पर गई तो वहाँ वरिष्ठ भ्राता महेन्द्र जी की पहली क्लास सुनी, 'अगर आप अपना तन सेवा में लगाते हो तो स्वस्थ तन मिलेगा, मन ईश्वरीय सेवा में लगाते हो तो शान्त-सुखी मन मिलेगा और धन ईश्वरीय सेवा में लगाते हो तो कभी गरीब नहीं होंगे अर्थात् धन से सम्पूर्ण सुख मिलेगा, धन तो बहुतों के पास होता है पर उसका सम्पूर्ण सुख सभी को प्राप्त नहीं होता। हर इन्सान ये तीनों सुख जीवन में चाहता है। मैंने भी चाहे थे पर चाहत पूरी करने की एक ही शर्त थी, जितना करोगे उतना पाओगे। उस समय सिंगरौली आश्रम में 35 कन्यायें और

20 भाई रहते थे। आश्रम का भवन बन रहा था। अमृतवेले के योग के बाद सभी भाई-बहनें कर्मणा सेवा करते थे। मैंने सोचा, मुझे भगवान से सब कुछ चाहिए और सबसे ज्यादा चाहिए (उसके लिए मुझे सब से ज्यादा करना होगा)। मेरे पास स्वस्थ तन है, इसी को सेवा में लगाते हैं, मन अपने आप लग जायेगा और जब धन आयेगा तो धन लगा देंगे।

मजबूत हो गए बाल और शरीर

ईंटें और बालू मज़दूर लोग सड़क के किनारे डालके जाते थे। आश्रम का भवन वहाँ से थोड़ी दूरी पर बन रहा था। सब भाई-बहनें तगारी में तीन या चार ईंटें डालते और निर्माण कार्य तक लेकर जाते थे। मेरे से भी तीन या चार ईंटें ही उठती थीं पर मैं तो सब से ज्यादा करना चाहती थी क्योंकि मुझे सबसे ज्यादा चाहिए था। चार से

ज्यादा उठाती तो उठती ही नहीं थीं। एक दिन सब से ज्यादा करने के विचार के साथ सेवा करते-करते मेरी नज़र हाथ ठेले पर पड़ी और मैंने सोचा, इसके ऊपर तो बहुत-सी ईंटें आ सकती हैं। उसके ऊपर 15 ईंटें रख कर उसे अपनी दोनों चोटियों से खींचना शुरू किया। ऐसा करना बहुत सहज लगा। इस प्रकार सेवा करते-करते 20 ईंटें, 25 ईंटें और 50 ईंटें ढोई जाने लगीं। इससे मेरे बाल और शरीर इतने मजबूत हो गए कि मैंने चोटियों से बड़ी गाड़ी खींचने का मन बना लिया।

गिनीज़ बुक में बनाया रिकार्ड

पहली बार जब चोटियां बांधकर जीप खींची तो पिताजी ओझा के पास ले गये। सबको लगा कि मेरे अन्दर कोई जिन्न प्रवेश कर गया है। ओझा ने झाड़ा लगाया, भभूति दी और पिताजी को विश्वास दिलाया कि अब जिन्न को बांध दिया गया है, अब यह ऐसा कुछ नहीं करेगी। उसके छह महीने बाद मैंने भोपाल में मिनी बस खींची और फिर बड़ी बस खींची। सन् 2005 में ट्रक खींचा। शाबाश इन्डिया में सन् 2007 में कोरिया में डबल डेकर बस खींची। सन् 2008 में ट्रेन का इन्जन खींचा। सन् 2009 में लिम्का बुक में नाम दर्ज हुआ। सन् 2011 में ट्रोलर खींचकर, एक भाई का रिकार्ड तोड़ कर गिनीज बुक में नया रिकार्ड बनाया।

सच्चे दिल और सच्ची लगन से सब सम्भव

पाठकों को बता दूँ कि यह शक्ति भूत-प्रेत, जिन्न या किसी इन्सान की नहीं है। यह ईश्वरीय शक्ति है जिसे दिन प्रतिदिन बढ़ना ही था और वो बढ़ी। कहने का भाव यह है कि सच्ची दिल और सच्ची लगन है तो इस संसार में सब कुछ सम्भव है। राजयोग के अभ्यास द्वारा भगवान के सर्व खज़ानों और सर्व शक्तियों के हकदार हम बन सकते हैं। हर इंसान में कोई-न-कोई कला या विशेषता होती ही है। बस, ज़रूरत है उसे पहचानने की और पहचान कर ईश्वरीय सेवा में लगाने की। कई भाई-बहनें सवाल उठाते हैं, हमें कैसे पता पड़े कि हमारे अन्दर कौन-सी विशेषता है? इसका उत्तर पाने के लिए जाइये राजयोग-कक्ष में और सोचिये आप किसके बच्चे हैं? याद कीजिए उसके गुण और शक्तियों को। अपने अन्दर की सब विशेषतायें महसूस होने लगेंगी। ❖

बाबा ने लगा दिए पंख

ब्रह्माकुमारी नीलम, फरीदाबाद

पिछले कई महीनों से मैं घुटनों के भारी दर्द से पीड़ित थी। तभी होली पर, निमित्त बहन के साथ बाबा मिलन के लिए मेरा मधुबन जाने का कार्यक्रम बना। मधुबन में कमरे में सामान रखते हुए मुझे यही चिन्ता थी कि यहाँ से क्लास-रूम व क्लास-रूम से भोजन-कक्ष तक का सात दिनों का सफर कैसे पूरा होगा (दादी जानकी जी की प्रेरणाओं से मैं एक शक्तिशाली संकल्प के साथ चल रही थी कि मुझे जीवन में कभी भी बीमार नहीं होना है)। लिफ्ट देखती तो बाबा से मेरा कोल्ड वार शुरू हो जाता कि मुझे लिफ्ट से नहीं जाना है। दर्द के साथ ही, भरी हुई आँखों से सीढ़ियाँ चढ़ती-उतरती रही।

वह बाबा मिलन का दिन था। मैं अपने साथ आई हुई बहनों के साथ डायमण्ड हॉल में जाकर बैठी। योग के गीत बजने लगे, चारों तरफ अलौकिक वातावरण था, सब रूहानी मस्ती में प्यारे बाबा का इन्तजार कर रहे थे। तभी शिव पिता ने दादी जी के तन में प्रवेश किया, मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मेरे दोनों हाथ अचानक घुटनों पर चले गये और मैंने बाबा से कहा, बाबा, मुझे यह दर्द यहाँ से लेकर नहीं जाना है। मुझे अहसास हुआ जैसे बाबा कह रहे थे, बच्चे, उठो, तुम्हें तो होली का त्यौहार मनाना है। केसर जल और रूहानियत की बौछार ने मुझे उठने के लिए मजबूर कर दिया और अगले ही पल मैं रूहानी मस्ती में डांस करते हुए पंख लगाए एक नये आसमान में उड़ रही थी। घर वापिस आने पर मैं सीढ़ियाँ ऐसे चढ़ी जैसे कि मुझे कभी कुछ हुआ ही नहीं था। ❖

स्वयं रूहानी सर्जन ने किया उपचार

➢ ब्रह्माकुमार सुरेश जांगड़ा, जीन्द

कहते हैं जहां दवा काम नहीं आती, वहां दुआएँ काम आती हैं। यही कहावत मेरे जीवन में लागू हुई। बचपन से जवानी तक का जीवन संघर्षपूर्ण व अत्यधिक तनावपूर्ण रहा। बचपन में ही ईश्वरीय ज्ञान का बीज डल गया था इसलिए कभी दुख व तनाव की लकीरें चेहरे पर प्रकट नहीं होने दीं। हमेशा हंसता रहा। यही वजह थी कि शायद गुप्त रूप से लोगों की दुआएं इकट्ठी होती रहीं, सभी का स्नेह मिलता रहा।

लगने लगा डर रातों से

इसी बीच पता ही नहीं चला कि एक रोग मेरे शरीर में भयंकर रूप धारण कर चुका है जिसका नाम था रेस्टलेस लैग्ज सिंडरोम। सन् 2013 में मेरी हालत काफी खराब हो गई। मुझे पूरी-पूरी रात नींद नहीं आती थी। टांगों में अजीब-सी बेचैनी रहती थी। मैं इन्हें दबाता, पीटता, रस्सी के साथ बांधता पर कोई असर नहीं होता था। बड़े-बड़े डॉक्टरों को दिखाया, बहुत सारे टेस्ट करवाये, सभी टेस्ट नॉर्मल आते थे। किसी भी डॉक्टर से कोई फायदा नहीं हुआ। हालात ये हो गए कि मुझे रातों से डर लगने लगा। दिन तो कार्यों में बीत जाता था लेकिन शाम होते ही दिल घबरा जाता था। रात 12 बजे तक का समय बैठ कर या टहल कर गुज़ार लेता था। इसके बाद घर से निकल जाता था, सड़कों पर, पार्कों में रात-रात घूमता रहता था। आंखों में नींद होती थी लेकिन सो नहीं पाता था। मेरा मनोबल गिरने लगा। सुबह की मुरली मिस होने लगी। मुश्किल से सुबह ही आधा घन्टा नींद आती, वही समय मुरली क्लास का होता था। कभी-कभी मन में बुरे विचार आते लेकिन ड्रामा का पाठ पक्का होने से बचाव हो जाता था।

सच्चे दिल से बाबा को सारा हाल बता दिया

जब अप्रैल, 2013 में बाबा का लास्ट टर्न आया तब मेरा भी माउंट आबू आना हुआ। पूरी रात ट्रेन में एक भाई मेरी टांगों की मालिश करता रहा क्योंकि मैं लेटने में असमर्थ था। पूरी रात खड़ा रहना मुश्किल था। तीन अप्रैल को मैं सीधा ग्लोबल अस्पताल पहुँच गया। वहाँ मुझे छह तारीख का दिन दिया गया। पांच तारीख को बाबा को आना था। सूर्य भाई की क्लास शाम को थी। उस क्लास में मुझे बहुत ताकत मिली। उन्होंने बताया कि सच्चे दिल से बाबा को अपना सारा हाल बताओ। बाबा वरदान देंगे। बाबा जब

आये तो मुझे तो बस मेरा इलाज चाहिए था। जब बाबा दृष्टि दे रहे थे तो मैंने अपना सारा हाल मन ही मन बाबा को बता दिया।

बिना दवाई इलाज हो गया

उस ही रात चमत्कार हो गया। जो भाई मेरे साथ, मेरे कमरे में ठहरे थे, वे मेरी हालत से अच्छी तरह परिचित थे क्योंकि वे रात को मेरे पैरों की मालिश किया करते थे। उस रात मैं ग्यारह बजे बिस्तर पर लेटा, मन में विश्वास लिये कि आज बाबा ने मुझे वरदानों से भरपूर किया है। मुझे नहीं पता कि मुझे कब नींद आई। जब सुबह चार बजे आंखें खुली तो दूसरे भाई मेरे से पहले उठे हुए थे। उन्होंने मुझे बधाई देनी शुरू कर दी। मैं हैरानी से उन्हें देख रहा था। उन्होंने बताया कि मैंने रात भर खर्राटों के साथ नींद ली। पूरी रात मेरी एक मिनट भी आँखें

बन्द नहीं होती थीं। उस रात मैं पूरे चैन से सोया। वास्तव में यह मेरे लिए एक चमत्कार था, खुशी के आंसू निकल रहे थे। बाबा को कोटि-कोटि धन्यवाद किया तथा सुबह दस बजे ग्लोबल अस्पताल के लिए निकल पड़ा। वहाँ डा.निखिल पटेल, एक डॉक्टर बहन व एक अन्य सहायक डॉक्टर ने मेरी करीब आधा घन्टा काउंसलिंग की और बड़े प्यार से तथा आत्मविश्वास से दो महीने की दवाइयाँ दीं। मैंने दवाइयाँ अपने घर आकर नौ तारीख से लेनी शुरू कीं लेकिन मेरा इलाज तो बिना दवाई के ही पांच तारीख को हो गया था। यह था बाबा का कमाल। बाबा ने मुझे चैन की नींद दे बेफिक्र बादशाह बना दिया। पाठकों के लिए कहना चाहूँगा कि दुआएं दो तथा दुआएं लो। अन्त समय दुआएं ही काम आएंगी। मनसा सेवा के द्वारा भी हम दुआओं का खाता जमा कर सकते हैं।

जीवन है उसी का
जो जिया शिव बाबा की खातिर,
वह विष हुआ अमृत
जो पिया शिव बाबा की खातिर,
चरणों में अर्पित हैं
सदा श्रद्धा सुमन उसको,
जो जलता रहा बन के दिया
शिव बाबा की खातिर।

❖

वाह ज्ञानामृत, वाह बाबा!

ब्रह्माकुमार डाल सिंह ठाकुर, पाटन (जबलपुर)

मैं गाँव में एक छोटी-सी किराने की दुकान से सात लोगों वाले परिवार को चलाता हूँ। बाबा के मिलने से पहले मेरी शराब की आदत से पूरा घर परेशान था। एक बार नशे की हालत में बाइक फिसल गई और रात भर जंगल में खाई में मैं गिरा रहा। सुबह कुछ लकड़हारों ने देखा तो मुझे बाहर निकाला। इस घटना के बाद भी मैंने शराब नहीं छोड़ी जबकि घर में सबने बहुत समझाया। तीनों बहनों ने भी कहा, भैया, अब तो शराब छोड़ दो। मैं तीनों बहनों का अकेला और सबसे छोटा भाई हूँ।

एक शिक्षिका बहन बस के इंतज़ार में मेरी दुकान पर बैठ जाती थी। जब उन्हें बाबा का परिचय मिला तो उन्होंने मुझे भी ज्ञानामृत पत्रिका देनी शुरू कर दी। पत्रिका पढ़ते-पढ़ते ही मेरी शराब की आदत कम होने लगी। फिर उन्हीं बहन के कहने पर 1 जनवरी, 2012 को स्थानीय ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर मैंने सात दिन का कोर्स किया, जो नि:शुल्क कराया जाता है। यह शिवबाबा की कमाल है कि कोर्स के लगभग 1 महीने बाद शराब पूर्ण रूप से छूट गई। अक्टूबर, 2011 से ज्ञानामृत पढ़ना शुरू किया और फरवरी, 2012 तक पूरा जीवन बदल गया। अब तो ग्रामवासी भी बहुत आश्चर्य करते हैं, जो कि पहले मुझे घृणा की दृष्टि से देखते थे। जनवरी, 2013 में हम शिव बाबा से माउंट आबू में मिलन मना चुके हैं। मेरा पूरा परिवार अब बहुत खुश है। शिवबाबा को और ज्ञानामृत को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं और जो भी हमारे सम्पर्क में आता है उसे संदेश देते हैं कि आप कम से कम एक बार ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जरूर जाएं और अपना जीवन सफल बनाएं। अब तो दिल यही गाता है, वाह बाबा वाह, वाह ज्ञानामृत वाह! ❖

विशेष सूचना

नए वर्ष 2015-16 के लिए ज्ञानामृत पत्रिका का वार्षिक शुल्क 100/- रहेगा। अकाउंट के हिसाब से अप्रैल से चूंकि नया वर्ष शुरू होता है इसलिए अप्रैल 2015 से बनने वाले नए सदस्यों से शुल्क 100/- वार्षिक लिया जाएगा।

बाबा ने जगाई जीवन-ज्योति

➢ ब्रह्माकुमारी अनीता, हठूर-जगराओं (पजांब)

पिछले लगभग तीन वर्षों से मुझे सिरदर्द इतना ज्यादा रहता था कि अनेक प्रकार की दवाइयाँ खाने के बाद भी ठीक नहीं हो रहा था। झाड़-फूंक से भी कोई असर नहीं हो रहा था। मास में 500 या 600 रुपये की दवाई खाना आम बात थी। कई डॉक्टरों के चक्कर काटने के बाद भी कुछ आराम महसूस नहीं हो रहा था। सारा दिन सोये रहना, बच्चों को ठीक से खाना भी न देना, चिड़चिड़े रहना यही मेरी दिनचर्या बन गई थी। मेरे ऐसे स्वभाव के कारण मेरे युगल ने मेरे से बोलना भी छोड़ दिया था।

अचानक एक दिन वे ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित अलविदा तनाव शिविर में शाम को बिना बताये ही चले गये, जो कि रात आठ बजे तक चलता था। शिविर हमारे शहर से लगभग एक घण्टे की दूरी पर दूसरे शहर में चल रहा था इसलिए रात दस बजे तक जब वे घर नहीं आये तो मुझे बहुत चिन्ता हुई कि शायद मुझसे नाराज़ होकर कहीं चले गये हैं।

तभी उनका फोन आया और प्यार से खुशख़बरी सुनाई कि आपकी सारी बीमारी योग से ठीक हो जायेगी और कल से हम सभी शिविर में जायेंगे। अगले दिन हम सभी खुशी-खुशी शिविर में गये। शिविर के दौरान बहन जी ने योग करना सिखाया। सिरदर्द, जो किसी दवाई से ठीक नहीं हो रहा था, उसी समय गायब होने लगा। घर पर भी मैंने उसी तरह योग का अभ्यास किया। ऐसे लगा जैसे रंग-बिरंगी किरणें मेरे मस्तक पर आ रही हैं। किरणें कहाँ से आ रही हैं यह समझ में तब आया जब ज्योतिबिन्दु शिवबाबा की पहचान मिली।

ज्ञान मिलने से पहले युगल तनाव के कारण शराब भी पीते थे और सही से धंधा भी नहीं चलता था। जिस दिन से शिविर में गये उस दिन से शराब को छुआ भी नहीं। मेरी बीमारी के कारण उन्हें खाना भी खुद बनाना पड़ता था और बच्चों को भी खिलाते थे जिस कारण तनाव में रहते थे। अब खुश भी रहने लगे हैं और काम भी ठीक चलने लगा है। अब ऐसा लगता है जैसे शिवबाबा हर कर्म करने के लिए ताकत भर रहे हैं। निमित्त बहन को मैंने अपना दवाइयों से भरा डिब्बा दिखाते हुए कहा कि अब ये सब मेरे लिए बेकार हैं। अब तो दिल में यही एक गीत बजता है, मेरा बाबा, मीठा बाबा। यही शुभकामना है कि जैसे मुझ आत्मा के दुख दूर हो गए ऐसे सब के दुख दूर हों, जैसे हमारे परिवार को शिवबाबा ने आकर संभाला ऐसे सबके घर में सुख-शान्ति हो। प्राणेश्वर बाबा ने मुझे नवजीवन दे दिया, जीवन ज्योति जगा दी। ❖

आदर्श पुरुषार्थी..पृष्ठ 20 का शेष..

स्वयं का परिवर्तन कर बाप समान बनने की बजाय बड़ों के परिवर्तन के बारे में ही सोचते-सोचते संगमयुग का अमूल्य समय बिताकर क्या पश्चाताप रूपी सजा खाने के लिए? भगवान के इस यज्ञ में सदा हाँ जी रहते हुए यज्ञ-रक्षक बन समाधान स्वरूप बनने की बजाय क्या नकारात्मक व्यवहार से विघ्नरूप बनने के लिए?..... नहीं। न ही हमको भगवान ने इसके लिए चुना है और न ही इससे हम हमारे अंतिम लक्ष्य तक पहुँच पाएँगे। परम सत्य यह है कि श्रीमतानुसार चलकर आदर्श पुरुषार्थी मुझे ही बनना है, मुझे ही अपने उदाहरण द्वारा शिवपिता को प्रत्यक्ष करना है और मुझे ही अंतिम लक्ष्य – बाप समान अवस्था तक पहुँचना है। तो...क्यों न हम दो ही अक्षर के इस सरल मार्ग को अपनाकर केवल ईश्वरीय परिवार के सामने ही नहीं बल्कि स्वयं ईश्वर की नज़रों में भी आदर्श बनें। ❖

सदा मुसकराइये – मायूसी भगाइये

➢ ब्रह्माकुमार नरेश, अहमदनगर

बुजुर्गों ने कहा है कि मनुष्यों को खाना एक गुणा, पीना दो गुणा, कसरत तीन गुणा, हंसना चार गुणा और प्रभुचिंतन पाँच गुणा करना चाहिए। खिला हुआ फूल और मुसकराता हुआ चेहरा देख सब प्रभावित हो जाते हैं। लेकिन आजकल की भागदौड़ की जिंदगी में मुनष्य मुसकराना भूल गया है। जिस मुसकान के लिए वो सब कुछ कर रहा है वह मुसकान उससे दूर होती जा रही है। तनाव और मायूसी के जीवन में ही वो जी रहा है। उसे मुसकराने की भी फुसरत नहीं है। कई बार कोई काम नहीं बनता है या बना हुआ कोई काम बिगड़ जाता है तो तुरंत कहते हैं, ''पता नहीं आज सवेरे-सवेरे किस मनहूस की शक्ल देखी, जो आज कोई काम नहीं हो रहा है।'' कहने का भाव, मायूस चेहरा किसी को भी अच्छा नहीं लगता। छोटा बच्चा दिन में 80 बार हँसता है परंतु बड़े होने पर लाफिंग क्लब (हास्य क्लब) में जाना पड़ता है। फोटो खींचते समय भी फोटोग्राफर को बार-बार कहना पड़ता है, स्माइल प्लीज़ (जरा मुसकराइये)। फोटो स्माइल वाली बन जाती है लेकिन निजी ज़िंदगी भी तो स्माइल वाली होनी चाहिए ना।

मुसकराना इनसे सीखें

रोने की कोई वजह नहीं होती। किसी ने कुछ कहा, बात बिगड़ गयी, मनमुटाव के कारण मन का रोना आता है। ज़िंदगी एक खेल की तरह है। खेल में हार और जीत दोनों होती हैं। अगर खेल में हार कर भी आप मुसकरा सकते हैं, तो कहा जाएगा कि ज़िंदगी के खेल में आप जीत गए। इस संसार में ऐसी भी महान आत्मा होकर गयी हैं जिनकी तस्वीरें

देखकर अपने आप होठों पर मुसकान आ जाती है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, श्रीराम, श्रीकृष्ण इनकी तस्वीरों में कभी भी मायूसी, उदासी नहीं मिलेगी। इसलिए सदा मुसकराइये, सच्चे दिल से, नि:स्वार्थ भाव से, निर्भयता से ताकि तन और मन स्वस्थ हो जाएँ। हमारी मुसकान में सूखापन न हो, सदा शुभभाव व स्नेह से भरी हुई मुसकान हो, सबको प्रेरणा देने वाली, शक्ति प्रदान करने वाली, सबका ग़म भुलाने वाली, आशा की नई किरण दिखाने वाली, उमंग उत्साह भरने वाली मुस्कान हो। कई बार स्वार्थ के कारण, ईर्ष्या के कारण भी हम मुसकराते हैं, जैसे कि शत्रु पर संकट आने पर... किसी की हीनता पर, गरीबी देखकर... किसी को गिरते हुए देखकर, यह मुसकान नुकसान पहुँचाने वाली है। हमारे मन में सभी के प्रति निर्मल भावनाएँ हों।

मुसकान अमूल्य है

मुसकान की कोई कीमत नहीं लगा सकता, मुसकान अमूल्य है। जैसे कोई कीमती (अमूल्य) चीज़ होती है तो उसे संभालकर रखते हैं, ऐसे ही मुसकान कई गुणा अनमोल है, व्यक्तिगत सम्पत्ति है। समस्याएँ आने पर हम इसे क्यों गंवाते हैं? परिस्थिति आने पर हम बेचैन, उदास हो जाते हैं। क्या हम इतने कमज़ोर हैं जो कोई हमारी मुसकान छीन ले? कदापि नहीं। हम इसे संभालें।

अपना चेहरा मायूस क्यों बनाएँ जो कोई पूछे कि आप उदास क्यों हैं? हर पल हमारी मुसकान बनी रहे। मुसकराना स्वाभाविक हो जाए। दुनिया के हिसाब से हमारे पास भले ही कुछ नहीं हो लेकिन मुसकान सबसे बड़ी दौलत है। मुसकराने में कभी भी कंजूसी नहीं करो। तभी तो कहते हैं, खुशी जैसी खुराक नहीं, खुशी जैसा खज़ाना नहीं। कुछ भी हो जाए लेकिन खुशी न जाए, मुसकान न जाए।

मुसकान गॉडली गिफ्ट है

मनुष्य परमात्मा की श्रेष्ठतम रचना है। मनुष्य ही ऐसा सौभाग्यशाली है जिसे परमात्मा ने वरदान के रूप में मुसकान दी हुई है। मुसकान वह वरदान है जिससे स्वयं की और संपर्क में आने वाले व्यक्ति के जीवन की कड़वाहट समाप्त हो जाती है। ''एक मुसकान – हज़ारों कुर्बान'' वाली कहावत निरर्थक नहीं, उसके पीछे मनोविज्ञान का गहरा चिंतन है। मैं कहूँ, मुसकराओ तो आप मुसकरा सकते हो, अगर कहूँ, गुस्सा करो, तो नहीं कर सकते। गुस्सा क्यों नहीं आया क्योंकि गुस्सा हमारा स्वभाव नहीं। कहा जाता है, Smile Goes Miles. हमारी खुशी दूर-दूर तक अपनी किरणें बिखेरती है इसलिए सदा खुलकर मुसकराइये।

सदा मुसकराना सबसे बड़ी कला

सृष्टि रंगमंच पर जितनी भी आत्माएँ हैं सबमें कोई न कोई विशेषता है। उस विशेषता के आधार से ही उसकी पहचान होती है, उसे याद किया जाता है। कई आत्माओं में मुसकराने की कला विशेष होती है। मुसकराना तो सभी जानते हैं लेकिन विपरीत परिस्थितियों में बड़ी-बड़ी ज़िम्मेवारी निभाते हुए भी सदा मुसकराना, यही महान आत्माओं की पहचान है। मिसाल के रूप में दादी प्रकाशमणि जी के जीवन की एक घटना याद आती है।

आबू में एक महासम्मेलन में यू.एन.से सिस्टर शैली आई थी, जो सोचती थी कि दादी प्रकाशमणि जी तो अंतर्राष्ट्रीय संस्था की प्रमुख हैं, उनसे मुलाकात तो बड़ी मुश्किल से होगी। दादी जी निर्मानता की मूर्ति थी। सम्मेलन के सत्र के बाद रोज़ सबको हाथ हिलाकर मिलती थी। बहन शैली ने दादी को कहा, दादी, आपके पास तीन हज़ार भाई-बहनें मेहमान के रूप में हैं, उनमें से एक हज़ार तो विशेष (वी.आई.पी.) हैं, क्या आपको कोई तनाव नहीं होता? दादी बोलीं, ये सब मेहमान अपने पिता के घर आए हैं, करनकरावनहार पिता परमात्मा हैं, सब कुछ वही करा रहे हैं इसलिए हमें कोई तनाव नहीं। दादी ने पूछा, सिस्टर शैली, आपको क्या सौगात दूँ? सिस्टर शैली बोली, दादी जी, एक सौगात माँगूँ, आप देंगी? अपनी शाश्वत हँसी सौगात में दे दो। दादी ने कहा, यह गॉडली गिफ्ट है, आपको चाहिए तो आप भी ले लो। दादी जी कितना भी व्यस्त हों, हर पल सदा हलके रहते थे।

कब चली जाती है मुसकान?

रोना किसी को सिखाया नहीं जाता, वह तो अपने आप आ जाता है। जन्म से ही बच्चा रोने लगता है। छोटी-छोटी बातों से मन भारी होने के कारण हमारी मुसकान चली जाती है और हम ग़म में डूब जाते हैं। जो हमेशा ही उदास रहते हैं, तनाव में रहते हैं उनके साथ बात करना भी कोई पसंद नहीं करते, सब किनारा करते हैं। ऐसे व्यक्ति अकेले रहना ही पसंद करते हैं। इसलिए इस मायूसी के पर्दे को हटाओ और सदा मुसकराओ।

चेहरे की सच्ची सुंदरता – मीठी मुसकान

आजकल खूबसूरती के लिए क्रीम, पाउडर आदि से काले चेहरे को भी गोरा किया जाता है। चेहरे की ऐसी सुंदरता आखिर तो विनाशी ही है। ऐसी सुंदरता को बनाए रखने के लिए रोज़-रोज़ मेकअप करना पड़ता है। खूबसूरत चेहरे पर अगर मीठी मुसकान न हो तो चेहरे की रौनक ही चली जाती है। चेहरे की स्वाभाविक सुंदरता है

मीठी मुसकान। इसके लिए मेकअप का खर्चा भी नहीं करना पड़ता। मुसकराता चेहरा और प्रसन्नता से दमकती आँखें देख भला कौन प्रभावित नहीं होता? मुसकान और प्रसन्न चेहरे से आपका व्यक्तित्व आकर्षक बन जाता है, यही सच्ची-सच्ची पर्सनैलिटी है।

मुसकान से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

मनोविज्ञान का मानना है कि 90% बीमरियाँ बढ़ने का कारण मन की कमज़ोरी है। कमज़ोर और नकारात्मक विचारों से मन उदास हो जाता है जिससे हमारी कई सारी आंतरिक शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। हमारे शरीर पर इसका बुरा असर पड़ता है। इसलिए मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए मुसकान बहुत बड़ा टॉनिक है। विटामिन की गोलियां और ताकत की सैकड़ों दवाइयों से कहीं बेहतर है – एक मीठी मुसकान, खिलखिलाहट और उन्मुक्त हास्य। स्वास्थ्य विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि प्रसन्नता प्रत्येक बीमारी की रामबाण दवाई है। मुसकराने का हमारे शरीर की सभी प्रणालियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और मस्तिष्क भी सक्रिय होता है इसलिए सदैव प्रसन्न मुद्रा में रहें जिससे कि शरीर के अवयव बहुत अच्छी तरह कार्य कर सकें। कहते हैं – ''सदा खुश रहो, मुसकराते रहो, खज़ाना खुशी का लुटाते रहो।'' ❖

नारी तू शिवशक्ति

ब्रह्माकुमारी उषा ठाकुर, मीरा सोसायटी, पूना

नारी तू शिवशक्ति, तेरी महिमा अपरम्पार,
नर भी तुझको शीश झुकाकर, करते नमन हज़ार।
अपनी गरिमा को पहचान, अपनी गरिमा को पहचान।।

नर कितने वेद-शास्त्र पढ़ जायें, खुद को भल ज्ञानी कहलायें,
पद भी कितने ऊँचे पा लें, चाँद-सितारे सब छू आयें।
फिर भी देवी सरस्वती से माँगें विद्यादान।।
अपनी गरिमा को पहचान.....

भले अरबपति, बनें पदमपति या कुबेर की खान,
संपन्न बनें धन-दौलत से, भौतिक सुख की भरमार।
करें याचना लक्ष्मी माँ से बनने को धनवान।।
अपनी गरिमा को पहचान.....

तन से कितने भी ताकतवर, वीर पुरुष बलवान,
अपनी अद्भुत शक्ति पर कितना भी हो अभिमान।
फिर भी दुर्गा माँ से माँगे, शक्ति का वरदान।।
अपनी गरिमा को पहचान.....

वन्दना में कहें 'वन्दे मातरम्', भाषा को 'मातृभाषा',
जल को कहते 'गंगामैय्या', पृथ्वी को 'धरती माता'।
'गो-माता', 'गीता-माता' कह करते हैं गुणगान।।
अपनी गरिमा को पहचान.....

तुम तो प्रथम गुरु हो माता, तभी तो हर मन है यह गाता,
आदिशक्ति के रूप में तेरा, माँ बच्चे का सच्चा नाता।
कहकर 'वन्दे मातरम्', भगवान भी दे सम्मान।।
अपनी गरिमा को पहचान.....

ग्लोबल अस्पताल में बच्चों/शिशुओं के लिये
हायड्रोसेफालस (Hydrocephalus) न्यूरोसर्जरी शिविर का सफल आयोजन

➢ डॉ. प्रताप मिड्ढा, निदेशक
ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, माउंट आबू

सिरोही जिले के पंचदेवल गाँव के कालूराम जोगी का घर खुशियों से भर गया जब उसके यहाँ पहली संतान बेटा पैदा हुआ। उसका नाम उन्होंने मुकेश रख दिया। परन्तु यह खुशी ज्यादा दिन तक नहीं रही। मुकेश जैसे-जैसे बड़ा होने लगा, बार-बार बीमार रहने लगा। उसे उल्टियां होने लगीं और अचानक दौरे भी पड़ने लगे। समय-समय पर गांव के डॉक्टर को दिखाते रहे किन्तु बीमारी का सही निदान नहीं हो पाया। धीरे-धीरे मुकेश का सर बड़ा होने लगा और उसकी आँखें नीचे की ओर झुक गयीं। मुकेश के साथ पैदा हुए अन्य बच्चे चलने लगे लेकिन मुकेश अपने आप खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। मुकेश के पिता कालूराम उसे शहर के बड़े अस्पताल ले आये जहाँ डॉक्टर ने उन्हें बताया कि बच्चे के मस्तिष्क में पानी भर गया है, वो हायड्रोसेफालस नाम की बीमारी से पीड़ित है। डॉक्टर ने उसे उदयपुर या अहमदाबाद ले जाने की सलाह दी। कालूराम को जब पता चला कि इस सर्जरी में पचास हज़ार से एक लाख तक का खर्चा आ सकता है तो वह हताश हो गया।

कालूराम मज़दूरी करता है और महीने के मुश्किल से 2500-3000 कमाता है। जब उसे कोई अन्य रास्ता नज़र नहीं आ रहा था तब अचानक ग्लोबल अस्पताल का एक फील्डवर्कर उसके घर पहुँचा। उस समय ग्लोबल अस्पताल में एक कैम्प लगा हुआ था जिसके तहत हायड्रोसेफालस से पीड़ित बच्चों का निःशुल्क इलाज किया जाना था। फील्डवर्कर को जब पता चला कि कालूराम का बेटा मुकेश इस बीमारी से पीड़ित है तो वह उसे कैम्प की जानकारी देने उसके घर पहुँचा। कालूराम और उसकी पत्नी को लगा मानो भगवान ने उनकी प्रार्थना सुन ली है। दूसरे ही दिन फील्डवर्कर के साथ वे दोनों मुकेश को लेकर माउण्ट आबू पहुँचे। ग्लोबल अस्पताल के डॉक्टरों ने मुकेश को हायड्रोसेफालस शन्ट सर्जरी के योग्य पाया और सी.टी.स्कैन सहित अन्य जाँच करवा कर भर्ती होने के लिये तारीख दे दी। चयनित तारीख को मुकेश की निःशुल्क सर्जरी कर दी गयी।

ग्लोबल अस्पताल में आयोजित इस कैम्प में न केवल मुकेश का ही निःशुल्क इलाज किया गया किन्तु

अन्य चार बच्चे, जो इसी बीमारी से ग्रस्त थे और आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवारों से थे, का भी निःशुल्क इलाज किया गया।

हायड्रोसेफालस शिशुओं में पाया जाने वाला मस्तिष्क रोग है जिसमें शिशु के मस्तिष्क (Brain) में पानी भर जाता है। चिकित्सकीय भाषा में कहें तो सेरिब्रोस्पाईनल फ्लुईड (CSF), जो कि एक प्रकार का द्रव है, असामान्य रूप से शिशु की खोपड़ी में संचय होने लगता है जिसके कारण मस्तिष्क के अंदर का दबाव बढ़ जाता है और शिशु के सिर का आकार बढ़ने लगता है। यह शिशु में मानसिक विकलांगता का कारण बन सकता है और समय पर इलाज न कराने पर शिशु की मृत्यु भी हो सकती है।

यह स्थिति जन्म से हो सकती है या फिर बढ़ते बच्चे भी इससे प्रभावित हो सकते हैं। आमतौर पर यह स्थिति शिशुओं में पाई जाती है पर वयस्क भी इससे ग्रस्त हो सकते हैं।

हायड्रोसेफालस के कुछ लक्षण: सिर का आकार असामान्य रूप से बढ़ना, उल्टियां होना, फिट्स, झटके आना, अत्यधिक नींद आना, चिड़चिड़ापन, सिर में असहनीय दर्द, विस्मृति, भ्रम इत्यादि

हायड्रोसेफालस का इलाज: शंट सर्जरी से इलाज संभव है। शंट सर्जरी एक कुशल न्यूरोसर्जन ही कर सकता है। इस सर्जरी के द्वारा मरीज़ के मस्तिष्क में एक पतली नली डाली जाती है जिसे शंट कहते हैं। इस शंट के द्वारा मस्तिष्क में जमा द्रव निकाला जाता है। इस प्रकार की शंट सर्जरी का आयोजन ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर में दिनांक 10 जनवरी, 2015 से 15 जनवरी, 2015 तक किया गया था।

अमेरिका, फ्लोरिडा (मियामी) के विश्व विख्यात न्यूरोसर्जन डॉ.संजीव भाटिया के द्वारा नि:शुल्क परामर्श और सर्जरी की गयी।

ग्लोबल अस्पताल का निरंतर यह प्रयास रहता है कि केवल महानगरों तक सीमित आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएँ, गाँव की गरीब जनता तक पहुंचाई जायें ताकि ज्यादा मरीज़ बिना भेदभाव के इसका लाभ पा सकें।

यह कार्य मुश्किल ज़रूर है लेकिन सभी के सहयोग से संभव हो पाया है। इस शिविर में दान दाताओं के साथ-साथ अमेरिका से आये हुए डॉ.संजीव भाटिया का अहम योगदान रहा जिन्होंने अपनी सेवाएँ नि:शुल्क प्रदान कर इन बच्चों को जीयदान दिया। ❖

श्रद्धांजलि

मीठे-प्यारे बापदादा की अति स्नेही, अथक सेवाधारी, साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई मीठी सावित्री बहन ने अपना बहुमूल्य जीवन सन् 1958 में ईश्वरीय सेवा में समर्पित किया। यज्ञ में एकॉनामी से चलना, यज्ञ की हर चीज़ की संभाल करना, सबको प्यार भरी पालना देना, यज्ञ सेवा में सदा तत्पर रहना – ये गुण आपकी रग-रग में समाए हुए थे। सादगी और त्याग-तपस्या की आप साकार मूर्ति थी। आपने पंजाब एवं संपूर्ण विदर्भ में ईश्वरीय सेवायें दीं। वर्तमान समय वसंत नगर, नागपुर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर अपनी सेवायें दे रही थीं। आपने दिनांक 26-01-2015 को शाम 7:30 बजे अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। आप 75 वर्ष की थीं। ऐसी स्नेही, अथक सेवाधारी, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

बापदादा के अति लाडले, सदा उमंग-उत्साह से यज्ञ की हर सेवा में हाँ जी करने वाले, सर्व के स्नेही चीनू भाई सन् 1976 से समर्पित रूप से पाण्डव भवन के विभिन्न डिपार्टमेंट्स में अपनी सेवायें देते रहे। आपने 1969 में बड़ौदा से ज्ञान प्राप्त किया। मधुबन में जब आये तो आपको म्यूजियम में सेवा मिली, उसके बाद रात के पहरे पर सेवायें दीं। वर्तमान समय आप मधुबन की लाइब्रेरी में बहुत प्यार से अपनी सेवायें दे रहे थे। आपकी आयु 75 वर्ष थी। 8-10 दिन पहले आपको हार्ट की तकलीफ हुई और अहमदाबाद में एन्जियोप्लास्टी की गई लेकिन हॉस्पिटल में ही 23 जनवरी, 2015 को रात्रि 11 बजे अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चले गए। ऐसे स्नेही, अथक सेवाधारी, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

टेन्शन नहीं, अटेन्शन

➢ ब्रह्माकुमार शुभम, ओ.आर.सी (गुड़गाँव)

मेरा जन्म एक साधन सम्पन्न संयुक्त परिवार में हुआ। माता-पिता ने मुझे मायावी दुनिया से दूर रखने और अच्छे संस्कार भरने के लिए धार्मिक कहानियाँ तथा महापुरुषों की जीवनियाँ सुनाईं। जब आयु 9 वर्ष की हुई तब माता-पिता को ईश्वरीय ज्ञान मिल गया। प्रारम्भ में उनका विरोध हुआ लेकिन बाबा की कदम-कदम पर मदद मिलने से समस्त लौकिक परिवार भी धीरे-धीरे ईश्वरीय ज्ञान के सम्पर्क में आता गया।

जैसा अन्न वैसा मन

जब 5वीं कक्षा में मैंने दोबारा साप्ताहिक कोर्स किया तो सबसे पहले खानपान की धारणा पर ध्यान दिया क्योंकि मैंने समझ लिया था कि ''जैसा होगा अन्न, वैसा होगा मन।'' इस धारणा से मुझ आत्मा में बल आने लगा। फिर धीरे-धीरे मुरली सुनने लगा तथा योग करने लगा, इससे आत्मा में इतनी शक्ति भरने लगी कि पहले मुझे कक्षा में प्रथम आने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती थी लेकिन अब यह कार्य बिना दबाव के सहजता से होने लगा। कक्षा 8वीं में N.T.S.E. (नेशनल टेलेन्ट सर्च एग्जाम) की स्कॉलरशिप प्राप्त की। कक्षा 10वीं में मेरा C.G.P.A. 10 में से 10 रहा। कक्षा 12वीं बोर्ड परीक्षा में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त किये और अब मेरा चुनाव आई.आई.टी.दिल्ली में हुआ है जिसमें पहले दौर में 13 लाख परीक्षार्थी थे। यह एक बड़ा इम्तिहान माना जाता है और विद्यार्थियों को रात-दिन मेहनत करनी पड़ती है लेकिन यह बाबा की शक्ति का ही कमाल था कि मैंने यह परीक्षा खेल-खेल में ही पास की। इसके अतिरिक्त स्पोर्ट्स, ड्राइंग आदि में भी बहुत से मैडल, शील्ड, ट्राफिज़ और नकद धन प्राप्त किया है। मैथ्स् और विज्ञान में ओल्मपियाड जीते हैं,

मैकमिलन ओल्मपियाड में स्वर्ण पदक मिला है।

सतगुरु है शिव परमात्मा

अक्सर बच्चों की परीक्षाओं के दौरान माता-पिता दबाव या तनाव में आ जाते हैं लेकिन बाबा को सब सौंप कर मेरे माता-पिता भी टेन्शन फ्री रहते हैं। जब मेरे सहपाठी पूछते हैं कि तू यह सब कैसे करता है और तुझे तनाव नहीं होता है क्या? तो मैं बताता हूँ कि केवल अटेन्शन देता हूँ। उन्हें यकीन नहीं होता, वो पुन: पूछते हैं, किसी गुरु या महाराज के पास जाता है क्या? मैं उनको बताता हूँ कि मेरा तो सतगुरु शिव परमात्मा है और मैं नियमित रूप से योगाभ्यास करता हूँ। फिर उनको प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का पता बता देता हूँ।

सारा श्रेय प्यारे बाबा को

घर पर ईश्वरीय साहित्य की लाइब्रेरी बना रखी है। भ्राता जगदीश जी की किताबें पढ़ना, शिव बाबा के गीत सुनना, आदि रत्नों के अनुभव सुनना, वरिष्ठ भाइयों के साथ खेलना मेरा पसन्दीदा कार्य है। अपनी सभी उपलब्धियों का श्रेय मैं अपने मीठे, प्यारे शिवबाबा को देता हूँ। हर कार्य शिवबाबा को बताकर, उन पर छोड़कर निश्चिन्त हो जाता हूँ। हम तो मात्र निमित्त हैं, करवाने वाले तो शिव परमात्मा हैं। जीवन का लक्ष्य है, बाबा के द्वारा रचे यज्ञ में तन, मन, धन से पूरा-पूरा सहयोग देकर मीठे बाबा से पूरा-पूरा वर्सा लूँ। अपने साथी भाइयों से यही कहूँगा कि वे भी ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर अपना भाग्य बनायें। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.करीमनगर- नवनिर्मित 'तपस्या भवन' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी। साथ में हैं ब्र.कु.कुलदीप बहन, ब्र.कु.सन्तोष बहन, ब्र.कु.लीला बहन तथा ब्र.कु.विजया बहन। **2.मुम्बई (घाटकोपर)-** 'ब्रह्माकुमारीज सखी मंच मिनिथॉन 2015' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अभिनेता भ्राता अक्षय कुमार, ब्र.कु.नलिनी बहन तथा अन्य। **3.हैदराबाद (शान्ति सरोवर)-** तेलगाना के उपमुख्यमंत्री भ्राता मोहम्मद अली को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कुलदीप बहन। **4.कुशीनगर-** उत्कृष्ट सेवा कार्यों के लिए ब्र.कु.मीरा बहन को सम्मानित करते हुए उत्तर प्रदेश के व्यवसायिक शिक्षा मंत्री भ्राता ब्रह्मा शंकर त्रिपाठी। **5.जलगाँव-** महाराष्ट्र के जलससाधन मंत्री भ्राता गिरीश महाजन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.तेजल बहन। **6.जैतारण-** राजस्थान के ग्राम विकास तथा पंचायत मंत्री भ्राता सुरेन्द्र गोयल को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.आरती बहन तथा ब्र.कु.छाया बहन। **7.कोसली-** हरियाणा के सहकारिता राज्यमन्त्री भ्राता विक्रम सिंह ठेकेदार तथा उनकी धर्मपत्नी जिला प्रमुख बहन सुरेश को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.निर्मला बहन। **8.वाराणसी (श्रीराम नगर)-** वाराणसी के मेयर भ्राता रामगोपाल मोहाले को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरोज बहन। **9.नई दिल्ली-** केन्द्रीय सूचना तथा प्रसारण राज्यमंत्री भ्राता राज्यवर्धन सिंह राठोड से मधुबन रेडियो स्टेशन के विकास के बारे में चर्चा करते हुए ब्र.कु.यशवंत पाटिल। **10.शेंदूर्णी-** महाराष्ट्र के जलससाधन मंत्री भ्राता गिरीश महाजन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.वर्षा बहन। **11.मऊ-** उत्तर प्रदेश के मत्स्य एवं उद्यम मंत्री भ्राता इकबाल महमूद को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 25th of each Month &
Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : March, 2015.

आबू रोड-
शिवरात्रि के उपलक्ष्य में अयोजित विशाल साप्ताहिक मेले का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, राजस्थान के गोपालन एवं देवस्थान राज्यमंत्री भ्राता ओटाराम देवासी, जिला प्रमुख बहन पायल परसुरामपुरिया, विधायक भ्राता समाराम गरासिया, ब्र.कु.मृत्युजय भाई, ब्र.कु.भूपाल भाई, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.गीता बहन तथा ब्र.कु.भरत भाई।

अहमदनगर-
''गीता रहस्य प्रवचनमाला'' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पद्मभूषण भ्राता अण्णा हजारे, मेयर भ्राता संगाम जगताप, ब्र.कु.गंगाधर भाई, ब्र.कु.ऊषा बहन, ब्र.कु.दीपक हरके तथा अन्य।

लखनऊ-
किसान सशक्तिकरण अभियान का शुभारम्भ शिवध्वज दिखाकर करते हुए राज्यपाल महामहिम भ्राता राम नाईक। साथ में कृषि विभाग के निदेशक भ्राता विश्नोई, ब्र.कु.राधा बहन तथा अन्य।

बडौदा (अलकापुरी)-
'दी फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.निरंजना बहन, भ्राता निजार जुमा, विधायक जीतूभाई सुखाडिया तथा अन्य।